संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

वर्ष-22 अंक- 335
पृष्ठ 8
बुधवार
26 अगस्त 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

# शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- सी सेक्शन डिल...

विचार- भारत की कूट...

खेल- क्या अंतरराष्ट्रीय...

**सीएम योगी का बड़ा एलान, बोले-**

## छह महीने के अंदर एक लाख युवाओं को देंगे सरकारी नौकरी

लखनऊ,संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सरकार ने 9 साल में 9.30 लाख से अधिक युवाओं को पारदर्शी ढंग से बिना भेदभाव सरकारी नौकरियां दी हैं। यूपी में कभी एक लाख नौकरियां कल्पना होती थी, लेकिन हम छह महीने के भीतर एक लाख युवाओं को सरकारी नौकरी का नियुक्ति पत्र देने जा रहे हैं। रिजल्ट की प्रक्रिया चल रही है। मुख्यमंत्री मंगलवार को इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में मिशन रोजगार के तहत उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग द्वारा कृषि विभाग में नवचयनित 3446 प्राविधिक सहायकों (ग्रुप–सी) व 126 मंडी सचिवों को नियुक्ति पत्र सौंपने के उपरांत युवाओं को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने नवचयनितों से कहा कि सरकार ने पारदर्शी नियुक्ति दी है तो आप भी इसका लाभ प्रदेश, भावी पीढ़ी और देश को दें। कर्तव्य का ईमानदारी से निर्वहन ही 'नेशन फर्स्ट' की थ्योरी है। सीएम ने आयोग व बोर्डों के अधिकारियों से कहा कि आपके कार्यों में सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं है। यदि हमने स्वतंत्रता दी है तो समय से परिणाम लाइए। अधियाचन जाने के बाद परिणाम आने में छह महीने से अधिक नहीं लगना चाहिए। एक महीने के अंदर विज्ञापन और अगले दो महीने के अंदर परीक्षा कराएं। प्रक्रिया को सहज–सरल बनाएं, जिससे युवा अपनी ऊर्जा का लाभ दे सके। जब हम युवा ऊर्जा को साथ लेकर चलते हैं तो परिणाम आते हैं। सीएम ने 9 साल में पारदर्शी नियुक्तियों को डबल इंजन सरकार की उपलब्धि बताते हुए कहा कि इस दौरान सरकार ने 9.30 लाख से अधिक युवाओं को सरकारी नौकरी उपलब्ध कराई है। किसी भी नियुक्ति पर कोई प्रश्न नहीं खड़ा कर सकता। 2017 से पहले तो विज्ञापन निकलते ही चाचा–भतीजे की जोड़ी और महाभारत का खानदान वसूली करने निकल पड़ता था। युवा भटकता था, लेकिन परिणाम नहीं आता था। अंततः माननीय न्यायालय को स्टे करना पड़ता था। युवाओं का समय और उम्र खराब होती थी। नौकरी न पाने वाले युवाओं को लोग किसी काम का नहीं मानते थे, लेकिन गलती युवा की नहीं, बल्कि सरकारी तंत्र में बैठे राजनेताओं, आयोगों व बोर्डों में बैठे बेईमान लोगों की होती थी। हमारी सरकार ने कहा था कि नकल माफिया की कमर तोड़ेंगे और उनके आकाओं को भी जमीन दिखाएंगे।

**मोदी ने की यूपीआई के 10 साल के सफर की तारीफ, कहा-**

## यूपीआई भारत के डिजिटल भुगतान के सफर में एक बड़ा मोड़

नयी दिल्ली,एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) के 10 साल के सफर की तारीफ करते हुए इसे देश की डिजिटल भुगतान क्रांति में एक क्रांतिकारी बदलाव लाने वाली ताकत करार दिया है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि इसका जबरदस्त विस्तार और पहुंच हर भारतीय के लिए गर्व की बात है। मोदी ने मंगलवार को 'एक्स' पर एक पोस्ट में पिछले 10 सालों में यूपीआई के सफर को याद किया और लोगों से यह बताने को कहा कि इस डिजिटल भुगतान प्रणाली ने उनकी जिंदगी कैसे बदली है।

उन्होंने कहा, " एक दशक पहले यूपीआई की शुरुआत की गयी थी, जो भारत के डिजिटल भुगतान के सफर में एक बड़ा मोड़ साबित हुआ। उन्होंने कहा, " यूपीआई का विशाल विस्तार और पहुच ऐसी चीज है, जिस पर हर भारतीय को गर्व होना चाहिए।" उन्होंने नागरिकों से अपने अनुभव साझा करने और यह बताने का आग्रह किया कि इस प्लेटफॉर्म का उनके रोजमर्रा के जीवन पर क्या असर पड़ा है।" उन्होंने कहा कि यूपीआई भारत के डिजिटल भुगतान अवसंरचना का एक अहम स्तंभ बनकर उभरा है। यह उपयोगकर्ताओं को मोबाइल एप्लिकेशन और दूसरे डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए बैंक खातों के बीच तुरंत पैसे ट्रांसफर करने की सुविधा देता है। इसके तेजी से विस्तार ने देश भर में लोगों, व्यवसायों और व्यापारियों के रोजमर्रा के लेन–देन के तरीके को बदल दिया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि बड़े व्यापारिक प्रतिष्ठानों से लेकर आस–पास की दुकानों और सड़क किनारे सामान बेचने वालों तक यूपीआई ने डिजिटल और कैशलेस भुगतान को ज्यादा आसान और सुलभ बनाने में मदद की है। स्मार्टफोन और इंटरनेट की पहुंच बढ़ने के साथ ही यह प्लेटफॉर्म बड़े शहरों से आगे बढ़कर छोटे कस्बों और ग्रामीण इलाकों तक भी पहुंच गया है। सरकार ने अक्सर यूपीआई को भारत के डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना और प्रौद्योगिकी आधारित एवं आर्थिक रूप से समावेशी अर्थव्यवस्था बनाने की कोशिशों की एक बड़ी सफलता के तौर पर पेश किया है। श्री मोदी की ये टिप्पणियां ऐसे समय में आयी हैं, जब सरकार डिजिटल वित्तीय सेवाओं के विस्तार और औपचारिक भुगतान प्रणाली तक पहुंच को मजबूत करने पर लगातार जोर दे रही है।

### जाति जनगणना की प्रक्रिया पर खरगे-राहुल ने जताई चिंता, मोदी को लिखा संयुक्त पत्र

नयी दिल्ली,एजेंसी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को संयुक्त पत्र लिखकर जाति जनगणना की मौजूदा प्रक्रिया पर गंभीर चिंता जताई है। खरगे ने कहा कि खुले सवालों के माध्यम से जातियों की सही गिनती संभव नहीं है। एक ही जाति के अलग–अलग नामों और उपजातियों के रूप में दर्ज होने से आंकड़े बिखर सकते हैं, जिसका सबसे अधिक नुकसान अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी), अति पिछड़े और वंचित समुदायों को होगा। श्री खरगे ने कहा कि कांग्रेस की मांग स्पष्ट है कि मौजूदा प्रश्नावली को रद्द कर प्रमाणित जाति सूची के आधार पर नई प्रश्नावली तैयार की जाए। इसके लिए राजनीतिक दलों, विशेषज्ञों और आम जनता से व्यापक परामर्श किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि तेलंगाना और बिहार में किए गए जाति सर्वेक्षणों की तर्ज पर पहले से तैयार और प्रमाणित जाति सूची के आधार पर गणना करना इसका व्यावहारिक समाधान हो सकता है। श्री खरगे ने जोर देकर कहा कि जाति जनगणना केवल कराई ही नहीं जानी चाहिए, बल्कि उसके आंकड़े सही और विश्वसनीय भी होने चाहिए। उन्होंने कहा कि सटीक जातीय आंकड़े सामाजिक न्याय और वंचित समुदायों के अधिकारों से जुड़े नीतिगत फैसलों के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं।

### दिल्ली में स्वाइन फ्लू का बढ़ता प्रकोप, राजधानी में मामलों में बढोतरी

नई दिल्ली,एजेंसी। स्वाइन फ्लू के मामले बढ़ने के बीच दिल्ली सरकार ने एक उच्च–स्तरीय बैठक बुलाई है। बैठक में मौजूदा हालात की समीक्षा और रोकथाम व नियंत्रण के उपायों पर चर्चा हो रही है। दिल्ली में स्वाइन फ्लू (एच1एन1) के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। इस साल दिल्ली में इन्फ्लुएंजा–ए के 2,300 से ज्यादा मामले सामने आ चुके हैं। इनमें शुक्रवार तक एच1एन1 के 1,777 से अधिक मामले शामिल हैं। वहीं, हस्वास्थ्य विभाग के अनुसार, अकेले गुरुवार को 114 नए एच1एन1 मरीज मिले। वहीं, स्वाइन फ्लू के मामले बढ़ने के बीच दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. पंकज सिंह ने एक उच्च–स्तरीय बैठक बुलाई है। बैठक में मौजूदा हालात की समीक्षा और रोकथाम व नियंत्रण के उपायों पर चर्चा हो रही है। दिल्ली सरकार ने लोगों से अपील की है कि स्वच्छता का ध्यान रखें, भीड़–भाड़ वाली जगहों से बचें, खांसते–छींकते समय मुंह–नाक ढकें, साबुन से हाथ धोएं और जरूरत पड़ने पर मास्क पहनें। अस्पतालों में पर्याप्त बेड, डॉक्टर, दवाएं और उपकरण उपलब्ध हैं। 35 अस्पतालों पर विशेष निगरानी रखी जा रही है। सरकार स्थिति पर लगातार नजर रखे हुए है। दिल्ली में इन्फ्लुएंजा–ए के कुल मामले लगभग 2,392 हैं, जिनमें एच1एन1 प्रमुख है। इन्फ्लुएंजा एबी के कुल मामले लगभग 2,602 हैं। दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य विभाग द्वारा पहले दिए गए आंकड़ों के अनुसार एच1एन1 के लगभग 1,777 से अधिक मामले दर्ज हैं। 54 फीसदी घरों में किसी ने किसी को बुखार या वायरल के लक्षण इन दिनों बुखार और वायरल के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं।

**राजनाथ सिंह का डीआरडीओ के टेक्नोलॉजी ट्रांसफर पर बड़ा ऐलान**

## जंग में भारतीय सेना को दनादन मिलेगा मिसाइलों का जखीरा!

नई दिल्ली,एजेंसी। रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार ने बड़ा फैसला लिया है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) की ओर से विकसित सभी पारंपरिक मिसाइल प्रणालियों की तकनीक भारतीय उद्योगों को हस्तांतरित करने को मंजूरी दे दी है। रक्षा मंत्रालय ने मंगलवार को बताया कि इससे देश में इन मिसाइल प्रणालियों का स्वदेशी उत्पादन किया जा सकेगा। मंत्रालय के अनुसार, इस कदम का उद्देश्य रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को मजबूत करना और देश के रक्षा पारिस्थितिकी तंत्र में घरेलू उद्योगों की भागीदारी बढ़ाना है। तकनीक हस्तांतरण के बाद पात्र भारतीय कंपनियां पारंपरिक मिसाइल प्रणालियों की डीआरडीओ–विकसित तकनीकों का देश में उत्पादन कर सकेंगी। इसके लिए संबंधित योग्यताओं, प्रमाणन और नियामकीय आवश्यकताओं को पूरा करना होगा। रक्षा मंत्रालय ने कहा कि यह पहल रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को हासिल करने और रक्षा विनिर्माण में भारतीय उद्योगों की भागीदारी बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इससे देश की स्वदेशी रक्षा उत्पादन क्षमता को और मजबूती मिलेगी। यह पहल मिसाइल प्रणालियों के विकास से औद्योगिक स्तर पर उत्पादन की ओर सफलतापूर्वक बदलाव को सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इससे उन्नत रक्षा प्रणालियों के विकास और निर्माण में भारतीय उद्योग की क्षमताओं का प्रभावी इस्तेमाल करना है। इससे देश की घरेलू विनिर्माण क्षमता और रक्षा औद्योगिक आधार को मजबूत करने के साथ भारतीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) तथा अन्य तकनीकी साझेदारों के लिए रक्षा आपूर्ति श्रृंखला में भागीदारी के नए अवसर पैदा होंगे। इस पहल का एक प्रमुख उद्देश्य रक्षा उपकरणों के आयात पर निर्भरता कम करना और देश में रक्षा प्रणालियों के निर्माण में घरेलू मूल्यवर्धन बढ़ाना है।

## पंजाब के 1000 स्कूल बनाम गुजरात के 1000 स्कूल, आओ करें तुलना-केजरीवाल

नयी दिल्ली,एजेंसी। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने मंगलवार को बीजेपी को चुनौती दी कि वे पंजाब और गुजरात के 1,000 सरकारी स्कूलों की तुलना करें। साथ ही, उन्होंने बीजेपी पर पंजाब के स्कूलों को बदनाम करने के लिए छेड़छाड़ किए गए एआई वीडियो का इस्तेमाल करने का आरोप भी लगाया। एक वीडियो मैसेज में केजरीवाल ने कहा कि वह पंजाब के 1,000 स्कूलों की लिस्ट देंगे और बीजेपी से कहा कि वे गुजरात के 1,000 स्कूलों के नाम बताएं ताकि मीडिया की मौजूदगी में दोनों जगहों के स्कूलों का संयुक्त निरीक्षण किया जा सके। केजरीवाल ने वीडियो मैसेज में कहा कि मैं बीजेपी को चुनौती देता हूंरू आप गुजरात में 30 साल से सत्ता में हैं और हम पंजाब में साढ़े चार साल से सत्ता में हैं। मैं आपको पंजाब के 1,000 स्कूलों की लिस्ट दूंगा और आप हमें गुजरात के 1,000 स्कूलों की लिस्ट दें। आइए, हम मिलकर इन स्कूलों का निरीक्षण करें और देखें कि कौन से स्कूल बेहतर हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा शासित राज्य अपने खुद के एजुकेशन इंफ्रास्ट्रक्चर को बेहतर बनाने के बजाय पंजाब के स्कूलों की आलोचना करने पर ध्यान दे रहे हैं। केजरीवाल ने कहा कि सिर्फ साढ़े चार साल में हमने पंजाब के स्कूलों को बहुत बेहतर बना दिया है। पंजाब में लगभग 19,700 स्कूल हैं, जिनमें से सिर्फ 500 स्कूल ही बाकी रह गए हैं। हमने बाकी 19,200 स्कूलों को बहुत अच्छा बना दिया है। उन 500 स्कूलों में भी काम चल रहा है और अगले डेढ़ से दो साल में उन्हें भी ठीक कर दिया जाएगा।

## पैनल को अपना काम करने दें

**दिल्ली विरोध प्रदर्शन मामले में अमित शाह की भूमिका की जांच वाली अर्जी पर सुप्रीम कोर्ट की दो–टूक**

नयी दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को कहा कि दिल्ली में 20 जुलाई के विरोध–प्रदर्शन के दौरान जरूरत से ज्यादा बल प्रयोग के आरोपों की स्वतंत्र जांच के लिए बनाई गई पांच सदस्यीय हाई–पावर्ड इंक्वायरी कमेटी (HPEC) को अपनी जांच जारी रखने दी जानी चाहिए। इस कमेटी की अध्यक्षता सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज जस्टिस आर सुभाष रेड्डी कर रहे हैं। याचिकाकर्ताओं ने कमेटी के पुनर्गठन और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह तथा सरकार और पुलिस के कुछ अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की कथित भूमिका की व्यापक जांच की मांग की थी। सीनियर वकील गोपाल शंकरनारायणन ने भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI) के सामने यह मामला उठाया।

### लघुकथा

## नसीब

आज संयोगवश केशव की अपने बचपन के मित्र राघव से बस स्टैंड पर मुलाकात हुई। काफी दिनों बाद मिलने के कारण दोनों मित्र अपने दुःख-सुख एक-दूसरे से बाँट रहे थे।

राघव को केशव के पुत्ररत्न प्राप्ति पर दी गई दावत आज भी याद थी। जब उसने केशव से उसके पुत्र के विषय में पूछा तो केशव बहुत दुःखी होकर कहने लगा— "क्या बताऊँ यार? बेटे की पढ़ाई में रूचि न होने के कारण ज्यादा पढ़ भी न सका और दोस्तों की गलत संगति के कारण अब तो उसका रोजगार संभालना भी मुश्किल है। आज वह हमारे लिए एक बहुत बड़ी समस्या है।"

मित्र की बात सुनकर राघव भी दुःख से भर गया।

केशव द्वारा पूछे जाने पर राघव ने बताया— "मेरे तो केवल एक ही बिटिया है। योग्य वर की तलाश में निकला हूँ, क्योंकि बिटिया पढ़-लिखकर डॉक्टर हो गई है। इसलिए उसके लिए उसकी तरह ही योग्य वर होना चाहिए।"

केशव कुछ देर चुप रहा। फिर राघव की ओर देखते हुए बोला— "सच कहूँ यार, नसीब तो तुम्हारा ही अच्छा है। बेटी है तो क्या हुआ, उसने कम से कम तुम्हारा नाम तो रोशन कर दिया।"

राघव मुस्कुराते हुए बोला— "हाँ दोस्त

केशव कुछ देर चुपचाप राघव को देखता रहा। उसे पहली बार लगा कि

**नसीब क्या होता है।**

रचना सक्सेना
प्रयागराज

## काली प्लास्टिक और कपड़े से ढके चार सिग्नल, बरौनी-गोंदिया एक्सप्रेस रोकी, जांच शुरू

प्रयागराज। प्रयागराज–मुंबई रेलखंड पर शरारती तत्वों ने चार रेलवे सिग्नल को काले प्लास्टिक और कपड़े से ढक दिया। इस घटना के कारण बरौनी–गोंदिया एक्सप्रेस को मदरहा स्टेशन पर रोकना पड़ा। प्रयागराज–मुंबई रेलखंड के मदरहा और जसरा रेलवे स्टेशन के बीच शरारती तत्वों ने चार सिग्नल को काले रंग की प्लास्टिक और कपड़े से ढक दिया। रविवार रात वहां से गुजर रही गाड़ी संख्या 15232 बरौनी–गोंदिया एक्सप्रेस के लोको पायलट को जब सिग्नल नहीं दिखा तो उसने ट्रेन की रफ्तार धीमी कर दी। मदरहा स्टेशन पहुंचकर ट्रेन रोक दी। लोको पायलट ने रेलकर्मियों को इसकी जानकारी दी। इसके बाद रेल महकमे के साथ सुरक्षा एजेंसियां हरकत में आ गईं। यह शरारत थी या साजिश, इन दोनों ही पहलुओं पर आरपीएफ ने जांच शुरू कर दी है। बताया जा रहा है कि मदरहा रेलवे स्टेशन के आउटर पर जसरा की ओर ग्राम सभा हरदी के सामने रेलवे के सिग्नल लगे हुए हैं। शरारती तत्वों ने रेलवे के सिग्नल नंबर 519 ए, 521 ए, 552 ए और 504 ए पर काले रंग की प्लास्टिक और कपड़े बांध ा दिए थे। ट्रेन का मदरहा स्टेशन पर ठहराव नहीं था। इसके बावजूद इसके लोको पायलट ने सतर्कता बरतते हुए ट्रेन को मदरहा स्टेशन पर रोक दिया। कुछ देर तक स्थिति का जायजा लेने के बाद ट्रेन को सुरक्षित आगे के लिए रवाना किया गया। घटना की सूचना मिलते ही रेलवे और आरपीएफ के उच्च अधि ाकारियों ने मौके पर पहुंचकर मुआयना किया। उत्तर मध्य रेलवे के सीपीआरओ डॉ. शिवम शर्मा ने बताया कि सिग्नल पर प्लास्टिक और कपड़ा लगाए जाने की पुष्टि हुई है। इस मामले में आरपीएफ पोस्ट ने अज्ञात उपद्रवियों के खिलाफ रेलवे एक्ट के तहत एफआईआर दर्ज कर ली है। सोमवार रात तक सिग्नल को ढकने वाले आरोपियों का कोई सुराग नहीं मिल सका था।

## इलाहाबाद हाईकोर्ट से अतीक के बेचे उमर को झटका, जमानत अर्जी खारिज

प्रयागराज। प्रयागराज के खुल्दाबाद थाने में 26 अप्रैल 2023 को उमर के खिलाफ मोहम्मद मुस्लिम ने प्राथमिकी दर्ज कराई थी। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अतीक अहमद के बड़े बेटे मोहम्मद उमर की जमानत की अर्जी खारिज कर दी। यह आदेश न्यायमूर्ति अवनीश सक्सेना की पीठ ने दिया है। प्रयागराज के खुल्दाबाद थाने में 26 अप्रैल 2023 को उमर के खिलाफ मोहम्मद मुस्लिम ने प्राथमिकी दर्ज कराई थी। एफआईआर में उमर और अन्य आरोपियों पर एक करोड़ 20 लाख रुपये की रंगदारी मांगने, अपहरण, मारपीट और जान से मारने की धमकी देने के गंभीर आरोप लगाए गए हैं।

## इलाहाबाद HC का फैसला : UP किराया कानून के 5 प्रावधान रद्द, नहीं ली राष्ट्रपति की मंजूरी

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने एक महत्वपूर्ण फैसले में उत्तर प्रदेश नगरीय परिसर किरायेदारी विनियमन अधिनियम–2021 की 5 महत्वपूर्ण धाराओं 8, 9, 10, 38 और 42 को असांविधानिक करार देते हुए निरस्त कर दिया।इलाहाबाद हाईकोर्ट ने एक महत्वपूर्ण फैसले में उत्तर प्रदेश नगरीय परिसर किरायेदारी विनियमन अधिनियम–2021 की 5 महत्वपूर्ण धाराओं 8, 9, 10, 38 और 42 को असांविधानिक करार देते हुए निरस्त कर दिया। कोर्ट ने कहा, कानून के कई प्रावधान केंद्रीय कानूनों– संपत्ति अंतरण अधिनियम, 1882 और प्रांतीय लघु वाद न्यायालय अधिनियम, 1887 के विपरीत हैं। ऐसे मामलों में राष्ट्रपति की पूर्व सहमति जरूरी थी, जो नहीं ली गई। इसी आधार पर जस्टिस सौमित्र दयाल सिंह और जस्टिस स्वरूपमा चतुर्वेदी की खंडपीठ ने कानून की पांच महत्वपूर्ण धाराओं को रद्द कर दिया। कोर्ट ने इंद्र भूषण साहनी एवं अन्य की याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए फैसला सुनाया। धारा 8 के तहत मकान मालिक व किरायेदार के बीच किराया तय होने का प्रावधान था। वहीं, धारा 9 किरायेदारी समझौते की शर्तों के आधार पर किराया बढ़ाने या संशोधित करने का प्रावधान करती थी। इसके तहत आवासीय संपत्ति के लिए सालाना 5: और गैर–आवासीय (व्यापारिक) संपत्ति के लिए 7: तक किराया बढ़ाने के नियम तय थे। कोर्ट ने कहा कि 2021 के कानून के प्रमुख प्रावधान रद्द होने के बाद उत्तर प्रदेश शहरी भवन (किराये पर देने, किराया और बेदखली का विनियमन) अधिनियम, 1972 स्वतः प्रभावी हो जाएगा। किराया और बेदखली अधिकारों का निर्धारण पुराने कानून व केंद्रीय कानूनों के तहत होगा।

## आरोपी डांस टीचर की ओर अंगुली दिखा मासूम ने कहा- पुलिस अंकल, यही है...

प्रयागराज। पुलिस अंकल, यही है जो मेरे साथ गलत काम किया था... तीन साल की मासूम ने पुलिस के सामने आरोपी नाबालिग डांस टीचर की ओर अंगुली से इशारा कर उसकी पहचान की। कैंट इलाके के एक प्ले स्कूल में बच्ची के साथ कथित दुष्कर्म के मामले में पुलिस ने कोतवाली थाना क्षेत्र निवासी आरोपी डांस टीचर को हिरासत में लिया है। हालांकि, आरोपी ने पूछताछ में घटना से साफ इन्कार किया है। मूलरूप से राजस्थान के रहने वाले कैंट निवासी डॉक्टर दंपती की तीन साल की बेटी कैंट क्षेत्र के एक प्ले स्कूल में पढ़ती है। आरोपी उसी स्कूल में बच्चों को डांस सिखाने के लिए आता था। आरोप है कि शनिवार को स्कूल में बच्ची के साथ गलत हरकत की गई। जांच के दौरान पुलिस ने बच्ची के सामने आरोपी की पहचान कराई। पुलिस ने बच्ची का मेडिकल परीक्षण कराया है। घटना के बाद उसकी हालत में सुधार बताया जा रहा है। सीसीटीवी खंगाला रू पुलिस ने प्ले स्कूल में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज भी खंगाली। एसीपी सिविल लाइंस विद्युत गोयल ने बताया कि प्ले स्कूल में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज की जांच की गई है। बच्ची के बयान और मेडिकल रिपोर्ट जांच की अहम कड़ी है। इन दोनों रिपोर्ट के आधार पर घटनाक्रम की पुष्टि करने के साथ ही मामले से जुड़े अन्य पहलुओं की पड़ताल की जा रही है।

## अत्यधिक बारिश से 81 गांवों में 18 फीसदी फसल प्रभावित

प्रयागराज। जिले में अत्यधिक बारिश से 81 गांवों के किसानों की 18 फीसदी फसल प्रभावित हुई है। सबसे अधिक प्रभाव खेती के उन क्षेत्रों में हुआ जहां जलभराव की समस्या है। उप निदेशक कृषि पवन कुमार विश्वकर्मा कहते हैं कि सबसे अधिक सब्जियों के पैदावार पर 15 फीसदी पर असर पड़ा है। इसके साथ ही पानी में डूबे रहने से करीब तीन फीसदी धान की फसल भी प्रभावित हुई है। जनपद में इसका सर्वे और आकलन कराया जा रहा है। बारिश से जिन किसानों की फसल का नुकसान हुआ है और उन्होंने अब तक फसल का बीमा नहीं कराया है। वह 31 अगस्त तक बीमा अवश्य करा लें। इसके लिए विशेष अभियान चलाकर किसानों को जागरूक किया जा रहा है। नियमानुसार, अत्यधिक बारिश या बाढ़ से फसल में 33 प्रतिशत या उससे अधिक का नुकसान होने पर ही किसान मुआवजे के हकदार होते हैं। मौसम विभाग के अनुसार, जिले में जून से अगस्त तक सामान्य तौर पर 503 मिमी वर्षा होती है लेकिन इस वर्ष इसी अवधि में 619.7 मिमी

# कौन थीं पहली महिला वकील कॉर्नेलिया? : इलाहाबाद हाईकोर्ट ने 1921 में अपनाया

## ऑक्सफोर्ड से पढ़ाई व 20 साल संघर्ष

प्रयागराज। कॉर्नेलिया सोराबजी भारत की पहली महिला वकील थीं, जिन्हें इलाहाबाद हाईकोर्ट ने 1921 में प्रवेश दिया। ऑक्सफोर्ड से कानून की पढ़ाई करने वाली वह दुनिया की पहली भारतीय महिला थीं। हजार बाधाओं को पार कर आगे बढ़ीं कॉर्नेलिया सोराबजी भारत की पहली वकील हैं, जिन्हें 19021 में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने प्रवेश दिया। खास यह कि करीब 20–22 वर्षों तक तत्कालीन अंग्रेजी कोर्ट उन्हें वकील बनने से यह कह कर रोकता रहा कि वह एक महिला हैं, जिसका कानून से क्या लेना–देना। ऐसी शख्सियत की तस्वीर से इलाहाबाद हाईकोर्ट का विधि संग्रहालय रोशन है। न्यायिक दस्तावेज सुर्ख हैं।

**ऑक्सफोर्ड से कानून की पढ़ाई करने वाली दुनिया की पहली महिला**

नासिक में जन्मीं कॉर्नेलिया ऑक्सफोर्ड से कानून की पढ़ाई करने वाली दुनिया की पहली महिला थीं। भारत की पहली लॉ ग्रेजुएट थीं, लेकिन उनका पेशेवर जीवन संघर्षों की तपती दोपहरी रहा। बॉम्बे हाईकोर्ट ने जब महिला होने का हवाला देकर वकालत के लिए उनका आवेदन निरस्त कर दिया तो 1899 में इलाहाबाद हाईकोर्ट आईं। यहां प्लीडर की परीक्षा पास की, जिसके बाद वह भारत के किसी भी कोर्ट में वकील के रूप में पैरवी कर सकती थीं। इसके बाद भी उनका नामांकन नहीं किया गया।

**महिला होने के कारण ठुकराई गईं**

कलकत्ता हाईकोर्ट में भेदभाव की शिकार हुईं, तल्ख टिप्पणियां सुनीं। मुख्य लाइब्रेरी में वह नहीं जा सकती थीं, अलग जगह दी गई। पढ़ने के लिए कुछ ही किताबें दी जाती थीं। बावजूद इसके उन्होंने हार नहीं मानी, लड़ती ही रहीं। अंततरू अगस्त 1921 में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने ससम्मान बतौर वकील उनका पंजीकरण किया। अधिवक्ता रूपाली गुप्ता ने अपने लेख (कॉर्नेलिया सोराबजी रू इंडियाज फर्स्ट लेडी एडवोकेट) में इसका उल्लेख किया है।

**श्जानती नहीं हो तुम किसके सामने खड़ी होश**

वर्ष 1904 में ब्रिटिश शासन ने कॉर्नेलिया को बंगाल, बिहार, उड़ीसा (अब ओडिशा) और असम में कोर्टस ऑफ वार्ड्स की लीगल एडवाइजर नियुक्त किया, जिसका काम महिलाओं और अनाथों को कानूनी सहायता देना था। रियासतों से संबंधी अदालतों में जब पैरवी करने का मौका मिला तो भी उन्हें नीचा दिखाने की कोशिश की गई। एक बार एक नामचीन भारतीय वकील ने उनसे कहा कि तुम जानती भी हो कि किसके सामने खड़ी हो...।

**मैडम, कोर्ट आपका ड्राइंगरूम नहीं...**

कॉर्नेलिया की बायोग्राफी लिखने वाली सुपर्ना गूप्तू लिखती हैं कि इलाहाबाद हाईकोर्ट में एक बार कॉर्नेलिया के सामने देश के बड़े वकील थे, जिन्होंने उनकी ड्राफ्टिंग को तथ्यहीन काव्यात्मक लेख बताते हुए मजाक उड़ाया। उनकी टिप्पणी को कॉर्नेलिया ने पेशेवर व्यवहार के विरुद्ध बताते हुए आपत्ति दर्ज कराई तो उन्होंने कहा कि मैडम यह कोर्ट है, आपका ड्राइंगरूम नहीं, शिष्टाचार के लिए मत रोइए। कोर्ट ऑफ वार्ड में मैडम कॉर्नेलिया सोराबजी का कोई सानी नहीं है। हालांकि, उन्होंने अदालतों में जिन व्यवध ानों का सामना किया, आज भी महिला वकील उन दिक्कतों से रूबरू हो रही हैं।

# यूपी : 'हिजाब इस्लामिक आस्था का जरूरी हिस्सा नहीं', कोर्ट से छात्रा को बड़ा झटकाय फैसले में अदालत ने कही ये बात

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने प्रयागराज की छात्रा की ओर से हिजाब पहनने वाली याचिका को खारिज कर दिया है। हाईकोर्ट ने कहा कि हिजाब इस्लामिक आस्था का जरूरी हिस्सा नहीं है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने स्कूल में यूनिफार्म के साथ हिजाब (हेड स्कार्फ) पहनकर प्रवेश की अनुमति मांगने वाली याचिका खारिज कर दी है। कोर्ट ने कहा कि विभिन्न उच्च न्यायालयों की भी यही राय रही है कि हिजाब पहनना इस्लामिक आस्था का अनिवार्य हिस्सा नहीं है, जिसके बिना वह अपने धर्म से बाहर हो जाएं। हाईकोर्ट ने कहा कि जब तक किसी शैक्षणिक संस्थान की यूनिफार्म नीति निष्पक्ष, गैर–भेदभावपूर्ण और अनुशासन बनाए रखने के लिए लागू की गई है, तब तक संस्थान के ड्रेस कोड का पालन करना अनिवार्य है। यह आदेश न्यायमूर्ति जेजे मुनीर व न्यायमूर्ति इंद्रजीत शुक्ला की खंडपीठ ने एक छात्रा की याचिका पर दिया है। याची छात्रा ने प्रयागराज के अतरसुइया स्थित एक स्कूल में कक्षा 11 में दाखिला लेते समय यूनिफार्म के साथ हिजाब पहनने की अनुमति मांगी थी। छात्रा का कहना था कि वह कक्षा 6 से 10 तक इसी स्कूल में हिजाब पहनकर पढ़ती रही है। इसलिए उसे आगे भी इसकी छूट मिलनी चाहिए। याचिका में कहा गया था कि हिजाब पहनना उसके धार्मिक अधिकार, निजता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अंतर्गत संरक्षित है। प्रतिवादी स्कूल व अन्य की ओर से अधिवक्ताओं ने दलील दी कि ड्रेस का उद्देश्य विद्यार्थियों के बीच एकरूपता बनाए रखना है। इसमें धर्म का पालन करने, प्रचार करने या धर्म को मानने की स्वतंत्रता से संबंधित मौलिक अधिकार के उल्लंघन का कोई मामला नहीं बनता है। याची को विद्यालय के अनुशासन का पालन करना चाहिए। सभी पक्षों को सुनने के बाद कोर्ट ने कहा कि अतीत में यदि स्कूल ने सौहार्द या लापरवाही के कारण हिजाब पहनने से नहीं रोका तो इसका मतलब यह नहीं है कि यह छात्रा का कानूनी या स्थायी अधिकार बन गया है। खंडपीठ ने पूर्व के विभिन्न उच्च न्यायालयों के फैसलों का संदर्भ देते हुए कहा कि याचिका में ऐसा कोई साक्ष्य रिकॉर्ड पर नहीं है जो यह साबित कर सके कि कक्षा के अंदर हिजाब पहनना एक मुस्लिम महिला के लिए धर्म का जरूरी हिस्सा है, जिसे छोड़ने पर वह अपने धर्म से बाहर हो जाएगी। कोर्ट ने कहा कि इस तरह की दलील और साक्ष्य के बिना, मौजूदा तथ्यों के आधार पर याची के पक्ष में फैसला नहीं लिया जा सकता। कोर्ट ने कहा कि स्कूलों में एक समान यूनिफार्म लागू करने का मुख्य उद्देश्य छात्रों के बीच सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक अंतर को मिटाकर एक धर्म–निरपेक्ष, सुरक्षित और अनुशासित माहौल तैयार करना है। यदि व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के आधार पर छात्रों को यूनिफार्म में मनमुताबिक बदलाव करने की छूट दी जाएगी तो इससे स्कूल ड्रेस कोड का मूल मकसद ही खत्म हो जाएगा।

# चारपाई पर लाश, सिर धड़ से अलग : निर्माणाधीन मकान में मिला खून से लथपथ शवय भाई के लिए दवा लेने निकला था शकील

कौशांबी। कौशाम्बी में एक निर्माणाधीन मकान में सिर कटा शव मिलने से पूरे इलाके में हड़कंप मच गया। पुलिस जांच में जुट गई है। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। मंझनपुर थाना क्षेत्र में राम वन गमन मार्ग के पास एक निर्माणाधीन मकान में एक व्यक्ति का शव मिला है। सूचना मिलने पर कौशांबी पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लिया। पंचायतनामा की कार्रवाई के बाद शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पुलिस के अनुसार, उच्चाधिकारियों ने घटनास्थल का निरीक्षण किया है। तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर कानूनी कार्रवाई की जा रही है। घटना के खुलासे के लिए तीन पुलिस टीमों का गठन किया गया है। पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी सत्यनारायण ने वीडियो बयान जारी कर कार्रवाई की जानकारी दी। निर्माणाधीन मकान में चारपाई पर पड़े शव का सिर धड़ से अलग था। सिर चारपाई से करीब तीन फीट दूर सिरहाने की तरफ पड़ा मिला। पुलिस को चारपाई के नीचे मृतक की चप्पल के अलावा एक अन्य पुरुष की चप्पल मिली। साथ ही, महिला की टूटी चूड़ी और गुलाबी रंग का छींटदार दुपट्टा भी बरामद हुआ। घटनास्थल से बरामद इन सामान ने पुलिस जांच को नया मोड़ दिया है। पुलिस यह पता लगाने में जुटी है कि मौके पर मृतक के अलावा कौन–कौन मौजूद था। बरामद चप्पल, चूड़ी और दुपट्टे को जांच के महत्वपूर्ण साक्ष्य के तौर पर देखा जा रहा है। पुलिस इन सभी बिंदुओं को जोड़कर हत्या की गुत्थी सुलझाने का प्रयास कर रही है। घटना की सुरागकशी के लिए फील्ड यूनिट की टीम खोजी कुत्ता लियो के साथ मौके पर पहुंची। टीम ने घटनास्थल से कई अहम साक्ष्य जुटाए और लियो की मदद से आसपास के इलाके में सुराग तलाशे। लियो घटनास्थल से करीब 500 मीटर दूर बस्ती की ओर जाने वाली पगडंडी पर पहुंचा। रास्ते में खड़ी एक बाइक को सूंघने के बाद वह वापस घटनास्थल पर लौट आया। पुलिस अब बाइक समेत आसपास मौजूद अन्य वाहनों और लोगों के बारे में जानकारी जुटा रही है। लियो के बाइक तक पहुंचने को भी जांच की महत्वपूर्ण कड़ी माना जा रहा है।

# महिलाओं का हिजाब पहनना इस्लामिक आस्था का जरूरी हिस्सा नहीं रू हाईकोर्ट

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने स्कूल में यूनिफार्म के साथ हिजाब (हेड स्कार्फ) पहनकर प्रवेश की अनुमति मांगने वाली याचिका खारिज कर दी है। कोर्ट ने कहा कि विभिन्न उच्च न्यायालयों की भी यही राय रही है कि हिजाब पहनना इस्लामिक आस्था का अनिवार्य हिस्सा नहीं है, जिसके बिना वह अपने धर्म से बाहर हो जाएं। हाईकोर्ट ने कहा कि जब तक किसी शैक्षणिक संस्थान की यूनिफार्म नीति निष्पक्ष, गैर–भेदभावपूर्ण और अनुशासन बनाए रखने के लिए लागू की गई है, तब तक संस्थान के ड्रेस कोड का पालन करना अनिवार्य है। यह आदेश न्यायमूर्ति जेजे मुनीर व न्यायमूर्ति इंद्रजीत शुक्ला की खंडपीठ ने एक छात्रा की याचिका पर दिया है। याची छात्रा ने प्रयागराज के अतरसुइया स्थित एक स्कूल में कक्षा 11 में दाखिला लेते समय यूनिफार्म के साथ हिजाब पहनने की अनुमति मांगी थी। छात्रा का कहना था कि वह कक्षा 6 से 10 तक इसी स्कूल में हिजाब पहनकर पढ़ती रही है। इसलिए उसे आगे भी इसकी छूट मिलनी चाहिए। याचिका में कहा गया था कि हिजाब पहनना उसके धार्मिक अधिकार, निजता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अंतर्गत संरक्षित है। प्रतिवादी स्कूल व अन्य की ओर से अधिवक्ताओं ने दलील दी कि ड्रेस का उद्देश्य विद्यार्थियों के बीच एकरूपता बनाए रखना है। इसमें धर्म का पालन करने, प्रचार करने या धर्म को मानने की स्वतंत्रता से संबंधित मौलिक अधिकार के उल्लंघन का कोई मामला नहीं बनता है। याची को विद्यालय के अनुशासन का पालन करना चाहिए। सभी पक्षों को सुनने के बाद कोर्ट ने कहा कि अतीत में यदि स्कूल ने सौहार्द या लापरवाही के कारण हिजाब पहनने से नहीं रोका तो इसका मतलब यह नहीं है कि यह छात्रा का कानूनी या स्थायी अधिकार बन गया है।

## यूपी किरायेदारी अधिनियम-2021 के कई प्रावधान रद्द

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने उत्तर प्रदेश शहरी परिसर किरायेदारी विनियमन अधिनियम–2021 को राष्ट्रपति की मंजूरी के अभाव में असांविधानिक कर दिया है। यह फैसला न्यायमूर्ति सौमित्र दयाल सिंह, न्यायमूर्ति स्वरूपमा चतुर्वेदी की खंडपीठ ने इंद्रभूषण सावनी बनाम कंचन कुमारी जैन व अन्य समेत जुड़े मामलों में सुनाया है। कोर्ट के इस फैसले का सीधा असर मकान मालिकों और किरायेदारों के बीच किराया बढ़ाने, किराया तय करने और बेदखली से जुड़े विवादों पर पड़ेगा। अब मनमाने किराये पर लगेगी लगाम पर कानूनी लड़ाई लंबी होगी। याचियों ने अधि ानियम 2021 की धारा 8, 9, 10 और 38 की सांविधानिकता को चुनौती दी थी। धारा–9 और 10 के तहत किराया तय या संशोधि ात करने की जो व्यवस्था थी, वह अब लागू नहीं रहेगी। इसलिए अधिनियम–2021 के कानून के तहत मकान मालिक किराया बढ़ा या संशोधित नहीं कर सकेंगे। कोर्ट ने माना कि यह कानून संविध ाान की समवर्ती सूची के अंतर्गत आता है। केंद्रीय कानून, संपत्ति अंतरण अधिनियम–1882 और प्रांतीय लघु वाद न्यायालय अधि ानियम–1887 के प्रावधानों के विपरीत है। इसके बावजूद इस कानून के लिए अनुच्छेद 254(2) के तहत राष्ट्रपति की पूर्व सहमति नहीं ली गई थी। कोर्ट ने अधिनियम की धारा–8 (देय किराया), धारा–9 (किराया संशोधन), धारा–10 (विवाद की स्थिति में किराया प्राधिकरण की ओर से किराया निर्धारण), धारा–38 और धारा–42 (अधिनियम का अन्य कानूनों पर प्रभावी होना) को असांविधानिक घोषित किया है। कोर्ट ने रेंट अथॉरिटी की ओर से धारा–10 के तहत किराया बढ़ाने और बेदखली से संबंधित जारी आदेशों को भी रद्द कर दिया है। साथ ही स्पष्ट किया कि आदेश की तिथि तक जिन मामलों में कोई कानूनी चुनौती नहीं दी गई थी और जो प्रक्रियाएं पूरी हो चुकी हैं, वे सुरक्षित रहेंगी। किरायेदार पर प्रभाव–मामलों की सुनवाई अब विशेष अथॉरिटी की जगह पुराने सिविल कोर्ट में होगी, जिससे मनमाने तरीके से किराया बढ़ाने या तुरंत बेदखल करने पर रोक लगेगी। मकान मालिक पर असर–किरायेदारी के पुराने मामलों और संपत्ति पर नियंत्रण के लिए सिविल अदालतों के स्थापित अधिकार फिर से प्रभावी हो गए हैं।

## बारावफात के जुलूस में नहीं बजेगा डीजे

प्रयागराज। बारावफात को लेकर कोतवाली परिसर में सोमवार को बैठक आयोजित की गई। बारावफात के पारंपरिक जुलूस के निर्धारित मार्ग एवं शांति व्यवस्था पर चर्चा की गई। कोतवाल अनूप कुमार सरोज ने लोगों से कहा कि जुलूस के दौरान डीजे का उपयोग नहीं किया जाएगा। नियम का पालन और भाईचारे की भावना से ही त्योहार की गरिमा कायम रहेगी। इस मौके पर भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा काशी क्षेत्र के क्षेत्रीय मंत्री सैफुल अब्बास, मो. कादिर, नूरैन अहमद, असगर अंसारी, सलीम खान, गुड्डू सभासद, मो. अख्तर मौजूद रहे।

## फूटेश्वर नाथ धाम में लगा भक्तों का तांता

प्रयागराज। सावन मास के आखिरी सोमवार को फूटेश्वर नाथ धाम में शिवभक्तों की भीड़ उमड़ी। मंदिर परिसर हर–हर महादेव के जयघोष से गूंजता रहा। श्रद्धालुओं ने भगवान शिव का जलाभिषेक और रुद्राभिषेक कर विधि–विधान से पूजा–अर्चना की। उन्होंने शिवलिंग पर जल, बेलपत्र और पुष्प अर्पित कर परिवार की सुख–समृद्धि की कामना की। मंदिर के पुजारी अभयराज पटेल ने बताया कि सावन के प्रत्येक सोमवार को फूटेश्वर नाथ धाम में बड़ी संख्या में शिवभक्त पहुंचते हैं। इधर, मांडा में कोसड़ाकला स्थित प्राचीन देवकुंड नाथ मंदिर में बड़ी संख्या में लोग पहुंचे।

## हर-हर महादेव और बोल बम के जयकारों से करछना शिवमय

प्रयागराज। सावन के अंतिम सोमवार को क्षेत्र के शिवालयों में भक्तों भी भारी भीड़ रही। सुबह से ही मंदिरों में जलाभिषेक के लिए श्रद्धालु पहुंचने लगे। हर–हर महादेव और बोल बम के जयकारों से क्षेत्र शिवमय हो गया। प्राचीन शिवमंदिर कुशगढ़, जरकुटी महादेव और हरहर भोला आश्रम में पूजन हुआ। शिवमंदिर सहित सभी शिवालयों में सुबह से शाम तक भक्तों की भीड़ रही। श्रद्धालुओं ने गंगाजल, दूध, बेलपत्र, धतूरा और फूलों से भगवान शिव का जलाभिषेक किया। कई मंदिरों में विशेष सजावट और भक्तों के लिए अलग व्यवस्था थी। जगह–जगह भजन–कीर्तन और रुद्राभिषेक का आयोजन हुआ। महिलाओं ने मंगल गीत गाए। श्रद्धालुओं ने परिवार की सुख–समृद्धि की कामना की। मंदिरों के बाहर पूजन सामग्री, प्रसाद और खिलौनों की दुकानों पर भी दिनभर भीड़ रही।

## बारिश और बाढ़ से कई बीघा फसल जलमग्न, किसान चिंतित

प्रयागराज। क्षेत्र में कई दिनों से लगातार हो रही बरसात और बाढ़ से खेतों में पानी भर गया है इससे किसानों की फसल बर्बाद होने के कगार पर है। जिससे किसान चिंतित हैं। पिपराव में नाले की सफाई नहीं होने और रामनगर के नाले पर बने बाईपास को न हटाने के कारण बारिश का पानी खेतों में भर गया है इससे कई बीघा धान की फसल जलमग्न है। किसान नरेंद्र कुमार, गुलाब, शाहिद, सुशील, फूल सिंह ने कहा कि समय रहते नाले की सफाई और बाईपास को हटा दिया जाता तो जलभराव की स्थिति उत्पन्न न होती। टोंस और लोनी नदी में आई बाढ़ से किनारों पर बसे कई गांवों में फसलें नुकसान हुई हैं। ग्राम पंचायत चिल्ला गौहानी में ढोंढ़वा नाले के पानी से गोपाल कृष्ण मिश्रा, कमलेश्वर सिंह, सुरेमा देबी, सुनील सिंह, दीपक द्विवेदी आदि किसानों की धान की फसल आठ दिनों से डूबी हुई है। असरवई, चामू, रेही, बैजला आदि गांवों में भी फसल चौपट होने के कगार पर है। तहसीलदार बारा अनिल कुमार पाठक ने कहा कि बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में लेखपाल को गाटावार सर्वे के लिए लगाया गया है, रिपोर्ट मिलने पर उच्चाधिकारियों को भेजी जाएगी। साथ ही स्वयं बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में किसानों के नुकसान का आकलन कर रहे हैं।

## बिजली कटौती पर ग्रामीणों ने उप केंद्र का किया घेराव

प्रयागराज। अघोषित बिजली कटौती सहित अन्य समस्याओं को लेकर सोमवार को ग्रामीणों ने फतेहपुर कायस्थान केंद्र का घेराव करते हुए प्रदर्शन किया। इसका नेतृत्व पीसीसी सदस्य कांग्रेस नेता आशीष पांडे ने किया। आशीष पांडे ने कहा कि प्रदेश सरकार मनमानी ढंग से बिजली का बिल तो वसूल रही है, लेकिन निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित नहीं कर पा रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि क्षेत्र के चक मोतीराम ओझा और कोयलिया गांव में खंभा तक नहीं लगा है। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि एक सप्ताह में चक मोतीराम ओझा, कोयलिया में खंभा और ट्रांसफार्मर व जर्जर तारों को ठीक नहीं किया गया तो अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन किया जाएगा। इस मौके पर प्रमोद मिश्रा, शिवपूजन पटेल, रामपाल पटेल, दुधी पटेल, बल्लू पटेल, चंदन यादव, राजेश पासी और श्याम बाबू यादव आदि रहे।

## संक्षिप्त

### ट्रांसपोर्ट कमिश्नर का 10 यात्री, मालकर अधिकारियों के विरूद्ध एक्शन

लखनऊ (संवाददाता)। परिवहन आयुक्त आशुतोष निरंजन ने आज वित्तीय वर्ष 2026–27 के प्रथम त्रैमास अप्रैल से जून की प्रवर्तन कार्यवाही की समीक्षा की। समीक्षा में पाया कि कतिपय यात्री,मालकर अधिकारियों ने अप्रैल से जून तक के प्रशमन शुल्क के निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष अत्यन्त न्यून कार्यवाही की। परिवहन आयुक्त ने कहा कि परिलक्षित हो रहा है कि प्रवर्तन अधिकारियों ने विभागीय लक्ष्य की प्राप्ति के लिये पदीय दायित्वों का निर्वहन निर्देशानुसार नहीं किया है। इनकी शासकीय कार्यों में लापरवाही एवं उदासीनता शासन एवं विभाग की मंशा के विपरीत होने के साथ राजस्व पूर्ति में बाधक है।ट्ांसपोर्ट कमिश्नर ने प्रशमन शुल्क के निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष अत्यन्त न्यून कार्यवाही करने वाले 10 यात्री,मालकर अधिकारियों के विरूद्ध उत्तर प्रदेश सरकारी सेवक अनुशासन एवं अपील नियमावली, 1999 के नियम–7 के अन्तर्गत विभागीय अनुशासनिक कार्यवाही संस्थित की है।जिन अधिकारियों के खिलाफ कार्यवाही की गई है,उनमें क्रमशः राजेश सिंह कुशवाहा यात्रीमालकर अधिकारी महाराजगंज मदन चन्द्र बलरामपुर केकी मिश्रा प्रयागराज प्रदीप कुमार श्रीवास्तव बस्ती अनीता वर्मा चन्दौली नरेन्द्र विक्रम सिंह महोबा विक्रांत सिंह रायबरेली रानी सेंगर अयोध्या प्रमोद कुमार जौनपुर विजय किशोर आनन्द आगरा शामिल हैं।

### चीनी की कमी नही, पूरे देश को उत्तर प्रदेश खिला सकता चीनी–योगी

लखनऊ (संवाददाता)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश में चीनी की कमी की खबरों को खारिज करते हुए कहा कि यूपी में पर्याप्त मात्रा में चीनी उपलब्ध है। उन्होंने दावा किया कि प्रदेश के पास 28 लाख टन चीनी का स्टॉक है, जो करीब सात महीने के लिए पर्याप्त है। यूपी में एक महीने में चीनी की 4 लाख टन खपत होती है। सीएम ने कहा कि यूपी न सिर्फ अपनी जरूरत पूरी करने में सक्षम है, बल्कि पूरे देश को चीनी उपलब्ध करा सकता है। अक्टूबर में जब फिर से चीनी मिलें चालू होंगी तो करीब 90 लाख टन चीनी का और उत्पादन होगा । सीएम योगी मंगलवार को नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। देश के अलग–अलग हिस्सों में चीनी की बढ़ती कीमतों और संभावित संकट की चर्चाओं के बीच सीएम का यह बयान आया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में चीनी की कोई कमी नहीं है और लोगों को किसी तरह की चिंता करने की जरूरत नहीं है।

### 24 घंटे मिलेगा जरूरत का सामान, हुसड़िया चौराहे पर 'एनीथिंग एनीटाइम एनीव्हेयर' का शुभारंभ

लखनऊ (संवाददाता)। गोमतीनगर के हुसड़िया चौराहे पर मंगलवार को 'एनीथिंग एनीटाइम एनीव्हेयर' न्यू शॉप की ग्रैंड ओपनिंग हुई। उत्तर प्रदेश के पूर्व डीजीपी डॉ. सूर्यकुमार शुक्ला ने फीता काटकर शॉप का उद्घाटन किया। इस मौके पर यश तवर, समीर राय, अभिषेक रस्तोगी रानू राय हैरिश खान सहित अन्य लोग मौजूद रहे। शॉप की ऑनर निकिता तवर ने बताया कि 'एनीथिंग एनीटाइम एनीव्हेयर' को लोगों की रोजमर्रा की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए शुरू किया गया है। शॉप 24 घंटे और सातों दिन खुली रहेगी। यहां ग्रॉसरी के साथ खाने–पीने की विभिन्न वस्तुएं उपलब्ध होंगी। शॉप में कैफे की सुविधा भी है, जहां पिज्जा, कोल्ड ड्रिंक, हॉट कॉफी, कोल्ड कॉफी, डेयरी उत्पाद, स्वीट्स और आइसक्रीम सहित कई चीजें मिलेंगी। निकिता तवर ने बताया कि ग्राहकों को एक ही स्थान पर रोजमर्रा की जरूरत का सामान उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है। मीडिया से बातचीत में निकिता तवर ने कहा कि आज लड़कियां किसी से कम नहीं हैं। वे लड़कों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं। उन्होंने कहा कि उनका सपना अपने पैरों पर खड़े होकर परिवार का नाम रोशन करना है। उन्होंने कहा, "यह शुरुआत है, आगे मुझे बहुत कुछ हासिल करना है।

### 'पुरानी पेंशन की मांग को लेकर लखनऊ में सार्थक पैरवी'

लखनऊ (संवाददाता)। सदस्य विधान परिषद देवेंद्र प्रताप सिंह से मुलाकात के बाद सचिवालय में अपर मुख्य सचिव, बेसिक शिक्षा पार्थ सारथी सेन शर्मा से सार्थक मुलाकात कर शिक्षामित्र से बने सहायक अध्यापकों को पुरानी पेंशन योजना से लाभान्वित करने के विषय पर विस्तार से चर्चा की तथा एमएलसी के पत्र एवं आवश्यक साक्ष्य सौंपे। इसके पश्चात उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य से मिलकर शीघ्र ही बेसिक शिक्षा अधिकारियों के साथ बैठक कर 28 जनपदों में विकल्प पत्र भरवाने का आदेश जारी करवाने हेतु निवेदन किया गया। पुनः सचिवालय जाकर विशेष सचिव, बेसिक शिक्षा अवधेश कुमार तिवारी से मुलाकात कर शिक्षामित्र से बने सहायक अध्यापकों को पुरानी पेंशन योजना से लाभान्वित करने के संबंध में वार्ता की। साथ ही पूर्व में सांसद फूलपुर प्रवीण पटेल, विधायक दीपक पटेल एवं विधायक हर्षवर्धन बाजपेई द्वारा बेसिक शिक्षा मंत्री को दिए गए पत्रों पर हुई कार्रवाई की जानकारी प्राप्त की। तत्पश्चात अनुभाग–5, बेसिक शिक्षा में जाकर उक्त पत्रों पर शीघ्र निर्णय लिए जाने का निवेदन किया। इस दौरान प्रांतीय उपाध्यक्ष गुरचरन, प्रांतीय उपाध्यक्ष आशीष श्रीवास्तव, प्रांतीय संगठन मंत्री शिवनाथ चौधरी, प्रांतीय संगठन मंत्री राजीव कुमार सिंह एवं मंडल अध्यक्ष प्रयागराज रमेश चंद्र सेन साथ रहे।

### लखनऊ में वकीलों के 12 अवैध चैंबर हटेंगे

लखनऊ (संवाददाता)। लखनऊ जिला न्यायालय के आसपास बने वकील के 12 अवैध चौंबरों को हटाने का रास्ता साफ हो गया है। सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के आदेश में दखल देने से इनकार कर दिया। कोर्ट ने साफ कहा कि वकील या बार एसोसिएशन का पदाधिकारी होने के आधार पर किसी अवैध निर्माण को संरक्षण नहीं दिया जा सकता। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि न्यायालय परिसर और सार्वजनिक रास्ते अतिक्रमण से मुक्त होने चाहिए। हाईकोर्ट ने पहले करीब 72 कब्जेदारों को नोटिस देकर अपना पक्ष रखने का मौका देने का आदेश दिया था। मामले की सुनवाई जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता की पीठ ने की। सुनवाई के दौरान जस्टिस विक्रम नाथ ने याचिकाकर्ताओं से पूछा कि आखिर ये निर्माण कहां स्थित हैं और मुख्य सड़क पर ऐसे ढांचे कैसे खड़े कर दिए गए। उन्होंने कहा कि अवैध निर्माण को इस आधार पर सही नहीं ठहराया जा सकता कि संबंधित व्यक्ति बार एसोसिएशन का अध्यक्ष या पदाधिकारी है। कोर्ट ने स्पष्ट टिप्पणी की कि पहले अवैध निर्माण किया जाए और फिर पद का हवाला देकर उसे बचाने की कोशिश की जाए, यह स्वीकार नहीं किया जा सकता।

# अवधी लोक भाषा का भाषा लोक बहुत ही समृद्ध,इसे संजोए रखने की जरूरत : अशोक



उन्होंने कहा–ब्रज,बघेली ,बुंदेली,भोजपुरी,मगही सहित अन्य स्थानीय बोली–बानियों में प्रायोगिक हमारे लोकगीतों में अनवरत अपने अतीत की परंपरा,मर्यादा,संस्कार, रीति–रिवाज,रहन सहन,की लोक संस्कृति और माटी,परिपाटी का लोक रंग मुखरित होता रहा है। अपनी इन्हीं लोक भाषाओं की मिठास

करछना। स्थानीय बोली बानी के शब्दरंग हमारे अतीत की पहचान और संबंधों की गहबरता लिए,हमारे समाज में आज भी विद्यमान है। हमारी अवधी लोक भाषा का भाषा लोक भी इसी तरह बहुत ही समृद्ध रहा है।आज खड़ी बोली और भाषाई आपा–धापी के बीच हमें चाहिए कि हम सब अपनी अवधी भाषा की मिठास और देशज भाषा के अपने इस भाषा लोक की संस्कृति और परम्परा को संजोने के लिए आगे आएं। आकाशवाणी और दूरदर्शन के कार्यक्रम संचालक और लोक भाषा अवधी के चर्चित कवि अशोक सिंह बेशरम ने यह बातें कटका स्थित के एन कान्वेंट में आयोजित एक समारोह में कहीं।

और अंतरंग के अहसास से जुड़े लोकभाषा के सहज शब्द शिल्प ही अपने तमाम संवेदनों के साथ हमें पीढियों से जोड़ते आ रहे हैं। आधुनिक सभ्यता और खड़ी बोली के इस दौर में भी देशज शब्दों की अपनी विशेष छवि और पहचान है। वर्तमान में कई मानकों के अनुरूप हमें आज सारी भाषाएं लिखने,सीखने,और समझने की भी जरूरत है लेकिन अपनी दिनचर्या में अपनी बोली–बानी के आदर्श लोक स्वरूप को भी सहेजे रखना आज बहुत आवश्यकता है। उन्होंने विशेष रूप से कवियों और लोक कलाकारों को इसे सहेजने पर जोर देते हुए कहा कि– हम अपनी मनमोहक भाषा की गहबर अभिव्यक्ति के साथ रोजमर्रा की दिनचर्या में इसका प्रयोग कर अपने बोली बानी और जमीनीभाषा को विस्तार दें। जहां एक ओर सरकार द्वारा भी स्थानीय बोली–बानियों को लेकर इसके प्रचार प्रसार और विरासत को सहेजने के लिए कई कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।वहीं आज समाचार पत्रों,पत्र–पत्रिकाओं और विशेष कार्यक्रमों में भी हमें अपनी लोक भाषा से संबंधित बिबिध कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने की जरूरत है। जिससे हम अपनी अतीत की थाती और पुरखों की इस अनमोल विरासत को जीवंत रूप देते हुए आने वाली पीढ़ी को भी अपनी मीठी भाषा के प्रयोग और सृजन धर्म से जोड़ रखें।

## नवयुग कन्या महाविद्यालय

# लखनऊ में बी.एड. विभाग एवं एसडीजीईएस कमेटी के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित हुई राखी मेकिंग प्रतियोगिता

अजय कुमार वर्मा

लखनऊ। आज नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ में बी.एड. विभाग तथा एसडीजी ईएस कमेटी के संयुक्त तत्वावधान में एक अंतर–विभागीय श्राखी मेकिंग प्रतियोगिताश का सफल आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य छात्राओं में सृजनात्मकता, हस्तकला कौशल तथा सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देना था।कार्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्या प्रोफेसर मंजुला उपाध्याय कें संरक्षण एवं मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। अपने संदेश में उन्होंने छात्राओं की प्रतिभा की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन न केवल हमारी सांस्कृतिक परंपराओं को जीवंत रखते हैं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में भी सहायक होते हैं।प्रतियोगिता के निष्पक्ष मूल्यांकन हेतु एक प्रबुद्ध




निर्णायक मंडल का गठन किया गया था, जिसमें निम्नलिखित वरिष्ठ प्राध्यापिकाएँ शामिल रहींरू

मेजर डॉ. मनमीत कौर सोढ़ी (विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग)

एवं प्रोफेसर संगीता शुक्ला (प्रोफेसर, इतिहास विभाग)

निर्णायक मंडल ने छात्राओं द्वारा बनाई गई राखियों का मूल्यांकन उनकी मौलिकता, डिजाइन, कलात्मक सौंदर्य और उपयोग की गई सामग्री की स्वच्छता के आधार पर किया। छात्राओं ने वेस्ट मटेरियल एवं पर्यावरण–अनुकूल (म्बव–तिपमदकसल) सामग्रियों का उपयोग कर एक से बढ़कर एक आकर्षक एवं संदेशप्रद राखियाँ तैयार कीं।प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा –

दिव्यांशी शुक्ला( प्रथम),सुकृति मौर्य द्वितीय , मानवी राजपूत द्वितीय (संयुक्त रूप से),श्वेता शर्मा तृतीय एवं अंजलि गुप्ता सांत्वना

इस अवसर पर बी.एड. विभाग तथा एसईडीजीएस कमेटी की सभी सम्मानित शिक्षिकाएँ उपस्थित रहीं, जिन्होंने प्रतियोगिता के सुचारू संचालन में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया और छात्राओं का उत्साहवर्धन किया।कार्यक्रम का समापन विजेताओं के नामों की घोषणा तथा सर्टिफिकेट वितरण के साथ हुआ ।

# मायावती का ऐलान, यूपी–उत्तराखंड के बाद पंजाब में भी बसपा अकेले लड़ेगी चुनाव

लखनऊ (संवाददाता)। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) प्रमुख मायावती ने मंगलवार को घोषणा की कि उनकी पार्टी पंजाब,



उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में होने वाले आगामी विधानसभा चुनाव बिना किसी गठबंधन के अपने दम पर लड़ेगी। लखनऊ स्थित केंद्रीय कार्यालय में पंजाब इकाई की समीक्षा बैठक के बाद जारी बयान में मायावती ने कहा कि पंजाब में पार्टी के जनाधार को बढ़ाने और संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। बसपा प्रमुख ने कहा, बसपा पंजाब का चुनाव भी उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड की तरह बिना किसी से कोई गठबंधन एवं समझौता किए हुए अकेले अपने बलबूते पर ही लड़ेगी। मायावती ने कहा कि चुनावी गठबंधन से पार्टी को सीट और वोट प्रतिशत दोनों में नुकसान होने की आशंका रहती है, जिससे कार्यकर्ताओं का मनोबल प्रभावित होता है। उन्होंने आगामी चुनाव में कर्मठ और ईमानदार लोगों को ही पार्टी का उम्मीदवार बनाए जाने की बात कही। बसपा प्रमुख ने कहा कि बेहतर चुनाव परिणाम हासिल कर पंजाब की सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी के साथ–साथ कांग्रेस और भाजपा की जनविरोधी नीतियों से त्रस्त जनता को राहत दिलाने का प्रयास किया जाएगा। मायावती ने कार्यकर्ताओं से 9 अक्टूबर को बसपा संस्थापक मान्यवर कांशीराम की पुण्यतिथि पूरी तैयारी के साथ मनाने तथा 15 जनवरी 2027 को जनकल्याणकारी दिवसश के अवसर पर पार्टी के आर्थिक सहयोग को पिछली बार से बेहतर बनाने का आह्वान किया। मायावती ने कहा कि पिछली अखिल भारतीय बैठक में दिए गए दिशा–निर्देशों पर मिले फीडबैक के आधार पर कमियों को समयबद्ध तरीके से दूर किया जाए। उन्होंने कार्यकर्ताओं से विरोधियों के साम, दाम, दंड, भेद जैसे हथकंडों का डटकर मुकाबला करते हुए आगामी चुनावों में बेहतर परिणाम के लिए पूरी तैयारी करने को कहा है।

# शाहनवाज राणा पर ईडी की कार्रवाई खत्म : 9 ठिकानों पर छापा, करोड़ों की नकदी बरामद, जांच अभी बाकी!

लखनऊ (संवाददाता)। पूर्व बसपा एमएलसी शाहनवाज राणा समेत तमाम आरोपियों के ठिकानों पर ईडी की कार्रवाई मंगलवार सुबह खत्म हो गई है। सोमवार से जारी कार्रवाई में टीम को 3.60 करोड़ रुपये बरामद हुए हैं। बताते चलें कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने सोमवार को मुजफ्फरनगर, गाजियाबाद और हरियाणा के फरीदाबाद स्थित नौ ठिकानों पर छापा



मारा। सोमवार शाम तक शाहनवाज राणा के मुजफ्फरनगर स्थित आवास और गाजियाबाद स्थित सुधा स्टील से दो करोड़ करोड़ रुपये की नकदी, तमाम संदिग्ध दस्तावेज और डिजिटल उपकरण बरामद किए गए थे। अधिकारियों के मुताबिक, शाहनवाज राणा और उनके बेटे से जुड़ी जम्बूद्वीप एक्सपोर्ट एंड इंपोर्ट लिमिटेड कंपनी में कथित फर्जी इनपुट टैक्स क्रेडिट (आईटीसी) क्लेम के तहत करीब 20 करोड़ रुपये की कथित चोरी से जुड़े मामले की जांच के तहत यह कार्रवाई की गई है। ईडी के अधिकारियों ने मुजफ्फरनगर में शाहनवाज राणा के आवास राणा हाउस, उनके चाचा एवं पूर्व विधायक एवं रालोद नेता नूर सलीम राणा के आवास, स्टील फैक्ट्री के मालिक संजय जैन के आवास, द्वारिकापुरी और नई मंडी स्थित पूर्व चेयरमैन अनिल तायल के परिसरों की छानबीन की गई है। जांच के दौरान अधिकारियों को तमाम ऐसे दस्तावेज मिले हैं जो स्टील कारोबारियों के साथ फर्जी आईटीसी हासिल करने के लिए फर्जी बिलिंग से जुड़े बताए जा रहे हैं। ईडी की कार्रवाई से उन लोहा कारोबारियों में हड़कंप है जो शाहनवाज राणा की कंपनी के साथ जुड़े थे।

## बादल भी नाराज हैं...

(छप्पय)

जो कुबेर के संग प्रीत कर जग में छाए।
पानी की सुन पीर न आँसू उनके आए।
कारा में है नीर दर्द को कौन पढ़ेगा।
बोतल से कर मुक्त उसे आजादी देगा।
नदियाँ आज उदास हैं सागर भी बेहाल हैं।
रे मानव! आवाज सुन बादल भी नाराज हैं।।

नदियाँ करें विलाप देखकर मानव हँसता।
बोतल में कर कैद नीर पर अंकुश रखता।
भूल गया इतिहास प्रलय जल जब लाता है।
धन–दौलत अरु शान यहीं पर रह जाता है।
चिंतन इस पर कीजिए शेष सभी कुछ गौड़ है।
जल बिन जीवन है नहीं कड़वी सच यह बात है।।

**डॉ. प्रदीप चित्रांशी**
लूकरगंज, प्रयागराज

### नवयुग कन्या महाविद्यालय में आयोजित हुई राखी मेकिंग प्रतियोगिता

लखनऊ (संवाददाता)। आज नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ में बी.एड. विभाग तथा एसडीजी ईएस कमेटी के संयुक्त तत्वावधान में एक अंतर–विभागीय राखी मेकिंग प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य छात्राओं में सृजनात्मकता, हस्तकला कौशल तथा सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देना था।कार्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्या प्रोफेसर मंजुला उपाध्याय कें संरक्षण एवं मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। अपने संदेश में उन्होंने छात्राओं की प्रतिभा की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन न केवल हमारी सांस्कृतिक परंपराओं को जीवंत रखते हैं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में भी सहायक होते हैं। प्रतियोगिता के निष्पक्ष मूल्यांकन हेतु एक प्रबुद्ध निर्णायक मंडल का गठन किया गया था, जिसमें निम्नलिखित वरिष्ठ प्राध्यापिकाएँ शामिल रहीं, मेजर डॉ. मनमीत कौर सोढ़ी (विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग) एवं प्रोफेसर संगीता शुक्ला (प्रोफेसर, इतिहास विभाग) निर्णायक मंडल ने छात्राओं द्वारा बनाई गई राखियों का मूल्यांकन उनकी मौलिकता, डिजाइन, कलात्मक सौंदर्य और उपयोग की गई सामग्री की स्वच्छता के आधार पर किया। छात्राओं ने वेस्ट मटेरियल एवं पर्यावरण–अनुकूल सामग्रियों का उपयोग कर एक से बढ़कर एक आकर्षक एवं संदेशप्रद राखियाँ तैयार कीं।प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा। दिव्यांशी शुक्ला( प्रथम),सुकृति मौर्य द्वितीय , मानवी राजपूत द्वितीय (संयुक्त रूप से),श्वेता शर्मा तृतीय एवं अंजलि गुप्ता सांत्वना इस अवसर पर बी.एड. विभाग तथा एसडीजीईएस कमेटी की सभी सम्मानित शिक्षिकाएँ उपस्थित रहीं, जिन्होंने प्रतियोगिता के सुचारू संचालन में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया और छात्राओं का उत्साहवर्धन किया।कार्यक्रम का समापन विजेताओं के नामों की घोषणा तथा सर्टिफिकेट वितरण के साथ हुआ।

### लखनऊ की राजनंदिनी तिवारी ने अपनी टीम के साथ जीती नेशनल मूट कोर्ट प्रतियोगिता

लखनऊ (संवाददाता)। वनस्थली विद्यापीठ में कानून की पढ़ायी कर रही लखनऊ की राजनन्दिनी तिवारी ने अपनी टीम की सदस्यों चार्वी शर्मा व विशाखा लक्ष्मी ने आयोजित की गयी प्रथम एसजीवीयू रांका नेशनल मूट कोर्ट प्रतियोगिता में पहला स्थान हासिल किया है। वनस्थली की इस टीम ने कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी को पराजित कर यह सफलता हासिल की। इस उपलब्धि के लिये प्रथम पुरस्कार के रूप में टीम को 21 हजार रुपये नगर, ट्राफी और प्रमाण दिया गया। जबकि दूसरे स्थान पर रही कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी की टीम को 11 हजार रुपये के साथ ट्राफी व प्रमाण पत्र दिया गया। इसी तरह बेस्ट मेंटर और रिसर्चर को पांच–पांच हजार रुपये पुरस्कार स्वरूप प्रदान किये गये। इस प्रतियोगिता में देशभर की प्रमुख संस्थानों में अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, जीएमएलयू, सिम्बोसिस लॉ स्कूल पुणे, नेशनल यूनिवर्सिटी आफ स्टडी एण्ड रिसर्च आदि की टीमों ने हिस्सा लिया। स्कूल ऑफ लॉ सुरेश ज्ञान विहार यूनिवर्सिटी जयपुर द्वारा आयोजित की गयी इस प्रतियोगिता का उद्देश्य कानून की शिक्षा ले रहे छात्रों को एडवोकेसी डेवलपमेंट स्किल, लीगल रिसर्च एप्टीट्यूड, ड्राफ्टिंग, कोर्टरूम के एटीट्यूड के क्षेत्र में तैयार करना है।

### विश्व मच्छर दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

लखनऊ (संवाददाता)। नवयुग कन्या महाविद्यालय, राजेन्द्र नगर, लखनऊ के प्राणी विज्ञान विभाग द्वारा 25 अगस्त 2026 को विश्व मच्छर दिवस के अवसर पर एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।


**उत्तर मध्य रेलवे**

ई-निविदा सूचना सं.: 6420262027-139 दिनांक: 21.08.2026

**ई-निविदा सूचना**

मण्डल रेल प्रबन्धक/इंजीनियरिंग/उत्तर मध्य रेलवे प्रयागराज द्वारा भारत के राष्ट्रपति के लिये एवं उनकी ओर से निम्नलिखित निर्धारित कार्यों के लिये ई-निविदाएं प्रपत्र पर दिनांक **16.09.2026** को 13:30 बजे तक आमंत्रित की जाती है। कार्यों का विवरण निम्न प्रकार है:-

**नि0सं0: 139** **कार्यों का विवरण:** संयुक्त निविदा - (अ) वरिष्ठ मण्डल इंजीनियर/प्रथम/उत्तर मध्य रेलवे/प्रयागराज के क्षेत्र में विद्युत कार्यों सहित झिंगुरा (10 नं0) और भीरपुर (8 नं0) टाइप-II क्वाटर निर्माण का कार्य। (ब) वरिष्ठ मण्डल इंजीनियर/प्रथम/उत्तर मध्य रेलवे/प्रयागराज के क्षेत्र नैनी - प्रयागराज के बीच गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त रिले हट (आर एच-2) का प्रतिस्थापन जिसमें इंडोर सिगनल एवं दूर संचार का कार्य शामिल है।

| | |
|---|---|
| **अनुमानित मूल्य (रू):** 6,40,70,582.55 | **अग्रिम धन राशि मूल्य (रू):** 12,81,400.00 |
| **कार्य समापन की अवधि:** 12 माह | **निविदा खुलने की तिथि:** 16.09.2026 |

**पात्रता मापदंड के अन्तर्गत सिमिलर कार्य:** भवन कार्य घटक के लिए: घटक का मान = 5,46,81,916.68, समापन कार्य की परिभाषा - भवन निर्माण। इलेक्ट्रिकल घटक के लिए घटक का मान = 93,88,665.87, समान कार्य की परिभाषा - एचटी/एलटी इंस्टॉलेशन (हाई टेंशन/लो टेंशन) से जुड़े किसी भी इलेक्ट्रिकल काम का संतोषजनक निष्पादन।

नोट:- 1. उपर्युक्त ई-निविदा का पूर्ण विवरण निविदा प्रपत्र सहित वेबसाइट www.ireps.gov.in पर समय 13:30 बजे तक निविदा खुलने की तिथि दिनांक **16.09.2026** तक उपलब्ध है। निविदा खोलने की नियत तारीख को **15:00** बजे या उसके बाद खोला जाएगा। 2. उपर्युक्त निविदा में ई-बिड के अलावा किसी अन्य रूप में बिड स्वीकार नहीं की जायेगी। इस प्रयोजन हेतु वेन्डरों को चाहिये कि वे अपने आपको **I.T.Act-2000** के अन्तर्गत **C.C.A** द्वारा जारी डिजिटल हस्ताक्षर प्रमाण पत्र के साथ **IREPS** की वेबसाइट पर पंजीकृत करायें। 3. निविदा की दरें केवल डिजिटल हस्ताक्षरित फाइनेन्सियल रेट पर ही विचारणीय है। दरें तथा अन्य वित्तीय प्रभार अन्य किसी भी फार्म/लेटर हेड पर यदि संलग्न है, तो उस पर विचार नहीं किया जायेगा तथा सीधी तौर पर अमान्य कर दिया जायेगा। 4. सभी निविदादाता निविदा संख्या 139 जिसमें निविदा का मूल्य रू. 50 लाख से ज्यादा है के लिए Annexure-V & V(A) (Document Verification Certificate) की आवश्यकता है। माल एवं / अथवा सेवाओं के सप्लायर/ठेकेदार समय-समय पर निर्धारित जी.एस.टी. एक्ट तथा नियमों के अन्तर्गत होंगे। 5. निविदा सूचना को उत्तर मध्य रेलवे की वेबसाइट www.ncr.indianrailways.gov.in पर भी अपलोड कर दिया गया है। 6. किसी भी प्रकार की तकनीकी समस्या के समाधान के लिये **IREPS** की वेबसाइट की हेल्पलाइन से सम्पर्क किया जा सकता है। 7. आनलाइन निविदा दिनांक **16.09.2026** को **13:30** बजे तक प्रस्तुत की जा सकती है। 8. ई-टेण्डर फार्म सभी निविदाकारों को मुफ्त जारी किए जाएंगे। 9. निविदा संख्या 139 के लिए निविदादाता को जी.सी.सी.-2022 (वर्क्स मामले भाग-1) के पैरा 10 से 18 के अनुपालन में आवश्यक दस्तावेजों का निविदा के साथ अनिवार्य रूप से संलग्न करना है अथवा उनकी निविदा अपूर्ण मानी जायेगी एवं तदनुसार अविचारणीय होगी। **1944/26 (PH)**

North central railways | @CPRONCR | www.ncr.indianrailways.gov.in

# सम्पादकीय.....

## जेन-जी की भाषा से परे, उनके अनुरूप ढलना

हाल ही में एक यात्रा के दौरान, मैंने अपने 8 वर्षीय बेटे पर गुस्सा किया। कुछ मिनट बाद उसने मेरे पति और मुझसे जो कहा, उससे हम हैरान रह गए। और तब से यह बात मुझे बार-बार याद आती रहती है। मेरी अभी-अभी एक खाने की दुकान पर एक कर्मचारी से बहस हुई थी। हम कार में वापस बैठ रहे थे लेकिन मेरा बेटा अंदर आने में थोड़ा धीमा था। वह मुझसे एक सवाल पूछने ही वाला था कि मैंने झल्लाकर कहा, ''तुम मेरी बात कभी क्यों नहीं सुनते?'' मेरे पति ने बीच में दखल देते हुए कहा, ''बेटा, अम्मा की बात सुनो।''गाड़ी में सफर शुरू करने के लगभग 5 मिनट बाद, मेरे बेटे ने आंसू रोकते हुए, धीरे से पूछा, ''आप और अम्मा ने कहा कि मैंने आपकी बात नहीं सुनी। मैंने क्या नहीं सुना?'' हम दोनों चौंक गए। सच तो यह था कि उसने कुछ भी गलत नहीं किया था। यह तो बस कर्मचारी से हुई बातचीत के कारण मेरी अपनी ही भड़ास थी। हाल ही में, जब भी मैं युवाओं को उन फैसलों पर सवाल उठाते देखती हूं, जिन्हें वे अन्यायपूर्ण मानते हैं, तो यह सवाल मेरे मन में बार-बार आता है। इससे मुझे आश्चर्य होता है कि क्या हम अगली पीढ़ी के सत्ता के प्रति दृष्टिकोण में एक गहरा बदलाव देख रहे हैं? यहां असली बदलाव भाषायी नहीं, बल्कि मूल्यों से जुड़ा है। पिछली पीढ़ियों की तुलना में जेन-की को सूचना तक कहीं अधिक पहुंच प्राप्त हुई है। पिछली पीढियों की तुलना में इनमें से कई बच्चों का पालन-पोषण ऐसे माता-पिता ने किया है जो जीवनयापन के संघर्ष में कम उलझे रहे और आत्म-अभिव्यक्ति और आत्मविश्वास को प्रोत्साहित करने में सक्षम रहे। जिस भाषा में वे पले-बढ़े हैं, वह अधिकारों, गरिमा, प्रमाणिकता, मानसिक स्वास्थ्य, समावेश और जवाबदेही की भाषा है। वे घर में होने वाले आघातों के पैटर्न को पहचानते हैं। वे विषाक्त कार्यस्थलों और अनुचित व्यवहार करने वाले बॉस के खिलाफ आवाज उठाएंगे। जवाबदेही और पारदर्शिता के आदर्श, जिन पर कभी लोक प्रशासन की पाठ्यपुस्तकों में महत्वाकांक्षी शब्दों में चर्चा की जाती थी, अब नागरिकों की अपने नागरिक संस्थानों से रोजमर्रा की अपेक्षाएं बन गई हैं। इसका हमारे सार्वजनिक सेवा वितरण तंत्र पर प्रभाव पड़ता है। यदि संस्थानों को अगली पीढ़ी के मूल्यों को प्रतिबिंबित करना है, तो इसकी शुरुआत नागरिकों के रोजमर्रा के अनुभवों से होनी चाहिए। जन्म प्रमाण पत्र मात्र 25 रुपए में जारी किया जाना चाहिए। हर बच्चे को शाम को खेलने के लिए पास के नगरपालिका पार्क तक पहुंच मिलनी चाहिए। घर का मालिक बनने के लिए भवन निर्माण की अनुमति, बिजली या पानी के कनैक्शन प्राप्त करने हेतु बिचौलियों के जाल में उलझने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। अपार्टमैंट खरीदने पर यह आश्वासन मिलना चाहिए कि इसका निर्माण नियमों के अनुसार किया गया है। पुलिस स्टेशन या सरकारी कार्यालय जाने पर डर या किसी ऐसे व्यक्ति को जानने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए, जो किसी और को जानता हो। सरकारी अस्पताल जाने पर मरीजों को इस बात की चिंता नहीं होनी चाहिए कि डॉक्टर आएगा या नहीं। संस्थागत सुधारों को और अधिक व्यापक बनाने के लिए कई प्रस्ताव हैं। लेकिन हम एक सरल और शायद अधिक परिवर्तनकारी उपाय से शुरुआत कर सकते हैं-सार्वजनिक सेवा वितरण के केंद्र में नागरिकों को रखना। व्यवस्थाओं को ठीक करने के अलावा, हमें मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता है, ताकि एक आम नागरिक वह हासिल कर सके, जो पहले से ही उसका है, किसी एहसान के रूप में नहीं, बल्कि अधिकार के रूप में। मेरे बेटे का सवाल अब भी मेरे मन में गूंज रहा है। मेरे लिए, यह एक ऐसा सवाल था, जिसने अधिकार और निष्पक्षता के बीच के अंतर को उजागर किया। हम देख रहे हैं कि नागरिकों का सत्ता के साथ संबंध स्थापित करने के तरीके में एक पीढ़ीगत बदलाव आ रहा है। जेन-जी के साथ असली चुनौती उनकी भाषा सीखना नहीं, बल्कि उनके मूल्यों के अनुरूप ढलना है। जवाबदेही और पारदर्शिता अब आकांक्षाएं नहीं, बल्कि अपेक्षाएं बन गई हैं। सार्वजनिक सेवा को अब ऐसे नागरिकों के लिए तैयार किया जाना चाहिए जो अस्पष्टता, देरी, मनमानी या भ्रष्टाचार को अपरिहार्य नहीं मानेंगे।

# भूजल की भयावह परिस्थिति

अरविंद जयतिलक

देश के भूजल में आर्सेनिक और क्रोमियम से जुड़े स्वास्थ्य जोखिम का उजागर होना बेहद डरावना और चिंतित करने वाला है। यह खुलासा हाल ही में प्रकाशित इंडियन मेडिकल जर्नल के तथ्यों से हुआ है। इस पत्रिका के विश्लेषण में आर्सेनिक से कैंसर का जोखिम सबसे बड़ी चिंता के तौर पर उभरा है। आर्सेनिक वाले पानी के सेवन से 49 फीसदी वयस्कों और 60 फीसदी बच्चों में संभावित गैर-कैंसर वाले स्वास्थ्य के दूसरे जोखिम की आशंका जताई गई है। बच्चों में दूषित पानी के त्वचा से संपर्क से भी खतरा सामने आया है। कैंसर के जोखिम के आंकलन में आर्सेनिक के संपर्क से जुड़े 72 फीसदी वयस्क और 69 फीसदी बच्चों के अध्ययनों में पानी के जरिए जोखिम तय सीमा से अधिक पाया गया है। क्रोमियम के मामले में यह आंकड़ा वयस्कों में 50 फीसदी और बच्चों में 56 फीसदी रहा। चिंतित करने वाला तथ्य यह भी है कि सतही पानी की तुलना में भूजल में गैर-कैंसरकारी स्वास्थ्य जोखिम ज्यादा पाया गया है। देश के राज्यों की बात करें तो पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, बिहार और जम्मू-कश्मीर समेत कई क्षेत्रों में आर्सेनिक को लेकर जोखिम बढ़ा है। पंजाब के तो कई जिलों में आर्सेनिक से दूषित भूजल से कैंसर का जोखिम तय सीमा से अधिक है। गौर करें तो यह पहली बार नहीं है जब दूषित भूजल को लेकर उपजने वाले खतरों के संबंध में खुलासा हुआ है। गत वर्ष श्भारतीय मानक ब्यूरोश (बीआईएस) द्वारा जारी रिपोर्ट में दिल्ली के पेयजल की गुणवत्ता देश में सबसे निचले स्तर पर होने का खुलासा किया गया था। रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली के पेयजल के नमूने 19 मानदंडों में से किसी पर खरे नहीं पाए गए थे। देश के अधिकांश राज्यों की भी स्थिति कमोवेश ऐसी ही है। अमेरिका के ड्यूक विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं द्वारा दावा किया जा चुका है कि भारत के भूजल में हानिकारक यूरेनियम की मात्रा विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के मानकों से अधिक है। यह शोध जर्नल एनवायरमेंटल साइंस एंड टेक्नालॉजी लेटर्स में प्रकाशित हुआ था जिसमें भारत के 16 राज्यों के भूजल में खतरनाक स्तर पर यूरेनियम होने का दावा किया गया था। डब्ल्यूएचओ ने भारत के लिए प्रति लीटर पेयजल में 30 माइक्रोग्राम यूरेनियम की मात्रा को सुरक्षित माना है, जबकि भारत के भूजल में यूरेनियम की मात्रा बहुत अधिक है। गत वर्ष ही विज्ञान पत्रिका नेचर जियो साइंस द्वारा भी खुलासा किया जा चुका है कि सिंधु और गंगा नदी के मैदानी क्षेत्र का तकरीबन 60 फीसद भूजल दूषित हो चुका है। हालत यह है कि कहीं भूजल सीमा से अधिक खारा हो चुका है तो कहीं उसमें आर्सेनिक की मात्रा खतरनाक स्तर पर पहुंच गयी है। आंकड़ों में कहा गया है कि 200 मीटर की गहराई पर मौजूद भूजल का बड़ा हिस्सा दूषित हो चुका है वहीं 23 फीसद भूजल अत्यधिक खारा हो चुका है। 37 फीसद भूजल में आर्सेनिक की मात्रा खतरनाक स्तर तक पहुंच गयी है। आर्सेनिक एक जहरीला तत्व होता है जो प्राकृतिक रूप से भूजल में पाया जाता है, लेकिन अत्यधिक खनन और फर्टिलाइजर के इस्तेमाल के कारण इसकी मात्रा लगातार बढ़ रही है। इसके उपयोग से डायरिया, उल्टी, खून वाली उल्टियां, पेशाब में खून आना, बाल गिरना और पेट दर्द जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। साथ ही इससे फेफड़े, त्वचा, किडनी और लिवर प्रभावित होते हैं। दूषित भूजल में खतरनाक रोग उत्पन करने वाले जीव पाए जाते हैं जो स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित करते हैं। इसमें पाए जाने वाले विषाणु पीलिया, पोलियो, गैस्ट्रोइंटराइटिस और चेचक जैसे रोगों को जन्म देते हैं वहीं जीवाणुओं द्वारा अतिसार, पेचिस, मियादी बुखार, हैजा, सूजाक व क्षयरोग उत्पन होते हैं। आर्सेनिक के अलावा दूषित भूजल में कैडमियम, लेड, मरकरी, निकल तथा सिल्वर की मात्रा भी बढ़ जाती है जो सेहत के लिए बेहद खतरनाक साबित होता है। दूषित भूजल में लोहा, मैंगनीज, कैल्सियम, बेरियम, बोरान एवं अन्य लवणों जैसे नाइट्रेट, सल्फेट, बोरेट और कार्बोनेट इत्यादि की अधिकता भी मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। एक आंकड़े के मुताबिक हर आठ सेंकेंड में एक बच्चा दूषित भूजल के सेवन से जीवन खो रहा है। हर साल पचास लाख से अधिक लोग दूषित भूजल के सेवन से मौत के मुंह में जा रहे हैं। यह समझना होगा कि भूजल जलापूर्ति का एक महत्वपूर्ण स्रोत है जिसका उचित उपयोग और संरक्षण होना चाहिए। भूजल पीने के पानी के अलावा पृथ्वी में नमी बनाए रखने में भी मददगार साबित होता है। पृथ्वी पर उगने वाली वनस्पति तथा फसलों का पोषण भी इसी जल से होता है। यहां यह भी जानना जरूरी है कि अन्य देशों की तुलना में भारत में सालाना मीठे व स्वच्छ पानी की खपत अधिक होती है। विश्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, घरेलू, कृषि एवं औद्योगिक उपयोग के लिए प्रतिवर्ष 761 बिलियन घनमीटर जल का इस्तेमाल होता है। मौजूदा समय में पानी की कमी बढ़ गयी है। गिरता भूजल सिर्फ महाराष्ट्र के मराठवाड़ा, उत्तरप्रदेश के बुंदेलखंड या बिहार के सीतामढ़ी तक ही सीमित नहीं है। पंजाब व हरियाणा जैसे राज्यों में भूजल स्तर 70 फीसद तक नीचे पहुंच चुका है। विगत वर्षों के आंकड़ों के मुताबिक भारत के 29 फीसद विकासखंड भूजल के दयनीय स्तर पर हैं। हालांकि देश में जल-संरक्षण तथा प्रबंधन कार्यक्रम को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए समय-समय पर अनेक उपाय किए गए हैं। मसलन 1945 में केंद्रीय जल आयोग का गठन किया गया जो राज्यों के सहयोग से देश भर में जल संसाधनों के विकास, नियंत्रण, संरक्षण तथा समन्वय को आगे बढ़ाता है। 1970 में केंद्रीय भू-जल बोर्ड का गठन किया गया। बोर्ड का मुख्य कार्य भू-जल संसाधनों के प्रबंधन, स्थायी एवं वैज्ञानिक विकास के लिए प्रौद्योगिकियों को विकसित करना तथा राष्ट्रीय नीति की निगरानी में उन्हें वितरित करना है। इसी तरह 1980 में श्राष्ट्रीय जल बोर्डश तथा 2006 में भू-जल के कृत्रिम पुनर्भरण के लिए सलाहकार परिषद का गठन किया गया। 2012 में श्राष्ट्रीय जल नीतिश बनाई गई जिसके तहत सुनिश्चित किया गया कि जल की उपलब्धता बढ़ाने के लिए वर्षा का प्रत्यक्ष उपयोग एवं अपरिहार्य वाष्पोत्सर्जन को कम करने का प्रयास होगा। देश में भूजल की मात्रा एवं गुणवत्ता की स्थिति का पता लगाया जाएगा। जलवायु परिवर्तन के अनुरूप जल संसाधनों के संरक्षण तथा प्रौद्योगिकी विकल्प को आजमाया जाएगा। औद्योगिक परियोजनाओं के लिए जल उपयोग हेतु परियोजना मूल्यांकन एवं पर्यावरणीय अध्ययन का विश्लेषण किया जाएगा। इन प्रयासों के बावजूद भारत में जल-संरक्षण एवं प्रबंधन हेतु व्यापक स्तर पर संचालित कार्यक्रम परिणाम की दृष्टि से प्रभावी साबित नहीं हुए है। भूजल के उपयोग को नियंत्रित करने के लिए एक स्पष्ट प्रभावी कानूनी ढांचे का अभाव बना हुए है। नतीजा भूजल न सिर्फ बुरी तरह प्रदूषित हो रहा है, बल्कि उसके स्तर में भी भारी गिरावट आ रही है। हैरानी यह है कि इस गहराते संकट का असर दिखने के बाद भी इसके बचाव के लिए लिए कोई कारगर पहल नहीं हो रही है। नतीजे में हर वर्ष अरबों घनमीटर भूजल दूषित हो रहा है।

# दलित पिछड़े के बाद महिला की आवाज, राहुल देश बदल रहे हैं

शकील अख्तर

राहुल के कई भाषणों के बाद हमने सुना लोग कहते हैं यह उनका सबसे अच्छा भाषण है। सच यह है कि उनके सभी भाषण बहुत अच्छे होते हैं। दिल से निकले हुए। उच्च आदर्शों वाले नफरत और विभाजन के विरोधी। एक बड़ा देश, विकसित और अंदर से मजबूत ऐसे ही बनाया जाता है। छोटेपन की बातें करके नहीं। हमें पता नहीं कि सोनिया गांधी की आने वाली किताब शबिलान्गिंग ए जर्नी आफ लवश में कांग्रेस के 2014 और उससे पहले 2013 में दिल्ली विधानसभा हारने के कारणों पर लिखा गया है या नहीं। उम्मीद कम है। क्योंकि अगर सोनिया लिख दें तो वह कांग्रेस के तमाम बड़े नेताओं के जिनमें से कुछ हैं और कुछ नहीं रहे के सारे दोहरेपन, निज स्वार्थ की राजनीति और कांग्रेस विरोधी मानसिकता को उजागर कर देगा। सोनिया बड़ी नेता और उससे बड़ी ह्यूमन वैल्यू वाली इंसान हैं। वे अपने साथ काम कर चुके लोगों की मिट्टी पलीद नहीं होने देंगी। हालांकि उन लोगों ने कांग्रेस की कब्र खोदने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। कोई कारण नहीं था 2014 में हारने का। यह अन्ना का नकली आंदोलन और केजरीवाल संघ का उनको समर्थन कुछ नहीं कर सकता था। अगर कांग्रेस के अंदर के लोग हथियार नहीं डालते तो। सोनिया और मनमोहन सिंह को नहीं डराते तो। राहुल और प्रियंका को मालूम है सब। मगर वे भी परिवार की उन उच्च मानवीय परंपराओं से बंधे हुए हैं जिसमें अपने साथ काम किए लोगों के अंदरखाने नुकसान पहुंचाने की कहानियों को सार्वजनिक नहीं किया जाता। विश्वासघात जैसे सबसे बड़े जख्म को भी चुपचाप सह लिया जाता है। लेकिन वफादार लोगों को थोड़ा बेहतर महसूस हो, लगे कि प्रतिबद्ध लोगों और निहित स्वार्थियों के बीच कोई फर्क किया जाता है इसके लिए कहीं कोई काम करना संदेश देना राजनीति में जरूरी है। कभी लिखेंगे। खैर यह लिखा इसलिए कि शनिवार 22 अगस्त को पुणे में राहुल ने एक धारा को पलटने वाला, खेल का रूख बदल देने वाला साहसिक कदम उठाया। उन्होंने सीधे पैट्रियार्की (पितृ सत्तात्मक समाज) को चुनौती दे दी। मनुस्मृति का उल्लेख करके बता दिया कि लड़कियों को नियंत्रण में रखने का विचार कहां से आया है। राहुल ने देश की 70 करोड़ महिलाओं को भारत की असली ताकत बताया। अब सोचिए कि जब देश में महिला सम्मान और समानता की बात भी बहुत मुश्किल से की जाती है। तब महिला मुक्तिकी बात तो एकदम क्रान्ति की आवाज ही है।

राहुल जैसा नेता ही यह कर सकते हैं। इससे पहले जाति गणना की बात भी देश में एक बड़ा विवादास्पद विषय माना जा रहा था। लेकिन राहुल ने उसे संभव कर दिखाया। मोदी सरकार को मानना पड़ा। हालांकि अब जनगणना में ओबीसी का कॉलम न देकर वह इस मुद्दे को कमजोर करने की कोशिश कर रही है। मगर अब यह देश की 50 प्रतिशत से ऊपर ओबीसी की राजनीतिक जगरूकता का सवाल है कि वे इसे किस प्रकार करवा पाते हैं। खासतौर से सत्तापक्ष के ओबीसी सांसद और विधायक। उन्हें आगे आकर सारे दलों के सांसद विधायकों का सम्मेलन करना चाहिए और ओबीसी के मुद्दों को बिना डरे उठाना चाहिए। उनके विरोध में दिल्ली में जंतर-मंतर से एक आन्दोलन शुरू हो गया। राहुल ने उन्हें जगा तो दिया था। मगर ओबीसी, दलित, आदिवासी जगा रहे इसकी जिम्मेदारी उस समुदाय के नेताओं की है। आन्दोलन सीधा है। आरक्षण हटाओ। मतलब सामाजिक न्याय खत्म करो। राहुल कहते रहे हैं कि यह मनुस्मृति लागू करने की तरफ जा रहे हैं। राहुल इसलिए हाथ में संविधान लिए घूम रहे हैं। वह राहुल का अभियान ही था 2014 में मोदी 240 से आगे नहीं बढ़ पाए। चार सौ पार मांग रहे थे। संविधान खत्म कर दिया जाता। खतरा अभी टला नहीं है। इसलिए राहुल ने पुणे में फिर मनुस्मृति का जिक्र किया। इससे पहले कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे राज्यसभा में अभी खत्म हुए मानसून सत्र में कह चुके हैं कि मनुस्मृति के जरिए दलितों को गुलाम बनाकर रखा गया था। उसका बदला कुछ ही दिनों में इस तरह लिया गया कि उत्तराखंड हलद्वानी में जिस रामलीला मैदान में खरगे की सभा हुई उस स्थान को गंगाजल से धोकर पवित्र किया गया। बताने के लिए कि दलित खरगे अपवित्र हैं। उत्तर प्रदेश जहां अभी सबसे निर्णायक विधानसभा चुनाव होने वाला है वहां जब 2017 में अखिलेश यादव ने मुख्यमंत्री निवास छोड़ा तो उसे भी गंगाजल से धुलवाकर पवित्र किया गया। सोचिए एक कांग्रेस का अध्यक्ष और एक सपा का अध्यक्ष और मुख्यमंत्री इनके ऐसे अपमान हो रहे हैं तो सामान्य दलित और पिछड़े का अपमान कैसे होता होगा? इस सामाजिक स्थिति को बदलने के लिए ही सामाजिक न्याय की शुरूआत हुई। इसे खत्म करना चाहते हैं। आरक्षण हटाओ आन्दोलन इसकी पहली कड़ी है। भाजपा इसमें शामिल हो गई है। उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक आरक्षण सुधार के नाम से इसका समर्थन करने प्रेस कान्फ्रेंस में सामने आ गए। तो अब जागना दलित पिछड़े आदिवासी, महिला को है। राहुल वोट का रिस्क लेकर उनके साथ खड़े होते हैं। जब दलित लड़की के साथ बलात्कार और हत्या में वे हाथरस जा रहे थे तो राज्य सरकार ने तो उन्हें रोका ही कई दूसरे लोग भी उनके खिलाफ बोलने लगे। यहां तक कि दलित की बेटी कहने वाली मायावती भी। वे खुद हाथरस नहीं गईं। राहुल को पहली बार में तो जाने ही नहीं दिया गया। दूसरी बार में पुलिस ने उन्हें सड़क पर गिरा दिया। लाठी चार्ज किया। मगर वे और प्रियंका परिवार तक पहुंचे। उस समय दलित विरोधी मानसिकता रखने वालों को भड़काने का भारी काम किया गया। सामूहिक बलात्कार और हत्या की बात न करके कहा गया कि राहुल आप लोगों का विरोध कर रहे हैं। आरोपियों के गैर दलित होने के कारण उन्हें समर्थन मिल रहा था। ऐसी मुश्किल घड़ी में राहुल ने परिवार के साथ खड़े होने का काम किया है। जाति गणना की मांग पर भी राहुल के खिलाफ ऐसा ही प्रचार किया गया। और अब महिला अधिकार की आवाज उठाने पर भी राहुल को पुरुष विरोधी बताया जा रहा है। राहुल केवल यह बता रहे हैं कि समाज मेल डोमिनेटिंग (पुरुष प्रधान) है। देश की तरक्की के लिए आधी आबादी को पूरे अधिकार मिलना चाहिए। 70 करोड़ महिला देश की सबसे बड़ी ताकत हैं। अब यह राहुल ने कहा तो आप नहीं मान रहे। लेकिन अगर महिला ताकत नहीं होती तो देश के सामने सबसे बड़ी चुनौती के समय दो महिला सैनिक अधिकारियों- कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह को क्यों लाया गया था? बिना महिला, दलित, ओबीसी, आदिवासी, अल्पसंख्यक को साथ लिए आप भारत को मजबूत और विकसित देश नहीं बना सकते। नफरत और विभाजन देश को अंदर से खोखला कर रहे हैं। राहुल ने मर्ज को पहचान लिया है। हाशिए पर पड़े हर समुदाय को साथ लेकर चलना होगा। 12 साल में मोदी ने सबको लड़वा कर देख लिया। वे सत्ता में तो बने रहे। मगर देश पीछे चला गया। वे बातों ही बातों के जरिए तुमार बांधते रहते हैं। मगर अब देश की सबसे नई पीढ़ी अल्फा ने भी जो स्कूली छात्र-छात्रा हैं उनकी बातों की हकीकत जान ली है। उससे पहले कि जेन जी तो सफल आन्दोलन करके उनके शिक्षा मंत्री का इस्तीफा ले चुकी है। उधर राहुल ने उन्हें और उनके सबसे खास अमित शाह को लोकसभा के अंदर सदन में नहीं आने दिया। माहौल पूरी तरह बदल चुका है। मगर राहुल जिनके लिए लड़ रहे हैं उन छात्र, युवा, महिला, दलित, ओबीसी सबको उनके साथ आना होगा। मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त नहीं चलेगा!

# राहुल ने रचा इतिहास

कांग्रेस सांसद और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने 22 अगस्त शनिवार को पुणे में इतिहास रच दिया। कोटा, देहरादून, प्रयागराज के बाद राहुल गांधी पुणे में छात्रों की गूंज कार्यक्रम करने पहुंचे थे, जिसके लिए उन्होंने पहले ही ऐलान कर दिया था कि इसमें लड़कियां बोलेंगी और बाकी सब सुनेंगे। यह कार्यक्रम के प्रचार का कोई तरीका नहीं था, बल्कि इस कार्यक्रम का आधार ही यही था। पुणे पहुंचने से पहले ही राहुल गांधी ने महिलाओं से उनके विचार एक सवाल पर मांगे थे कि हिंदुस्तान में महिला होने के क्या मायने हैं। देखने में यह सीधा सा सवाल लगता है, लेकिन इससे समाज में सदियों से चली आ रही लैंगिक गैरबराबरी पर विमर्श का नया पन्ना खुल गया। लड़कियों ने इस पर अपने जवाब राहुल गांधी को भेजे। इसके बाद पुणे में राहुल गांधी ने मंच से जो बातें कहीं, जिस तरह लड़कियों को बुलाकर उनकी रोजमर्रा की दिक्कतों पर बात की, वो अद्भुत, अकल्पनीय, असाधारण और अभूतपूर्व था। आजाद भारत में आज से पहले कभी किसी नेता ने इस तरह लड़कियों को सशक्त करने की बात नहीं कही, जैसी राहुल गांधी ने पुणे में कही। 1948 में जब संयुक्त राष्ट्र में सार्वभौमिक मानवाधिकार घोषणा के अनुच्छेद-1 में श्सभी पुरुष स्वतंत्र और समान पैदा हुए हैंश लिखा जाना था। तब भारत की तरफ से वहां मौजूद प्रख्यात समाज सुधारक हंसा मेहता ने इसका विरोध किया और उन्होंने इसे बदलकर श्सभी मनुष्य स्वतंत्र और समान पैदा हुए हैंश करवाया। दुनिया ने यह समझा कि मानवाधिकार केवल पुरुषों के लिए नहीं, बल्कि पूरी मानवता के लिए हैं। लैंगिक बराबरी की जो बात 1948 में हंसा मेहता ने शुरु करवाई थी, पुणे में राहुल गांधी उसे ही आगे बढ़ाते हुए दिखे। देश में लाखों बार महिला सशक्तीकरण की बात होती रही है। भाजपा के लिए तो महिलाएं वोटबैंक से ज्यादा कुछ नहीं हैं। इसलिए कभी मातृशक्ति तो कभी लाड़ली बहन के नाम पर उन्हें कुछ रुपए थमाकर भाजपा उनके वोट चाहती है और बदले में उन्हें सशक्त करने के सपने दिखाती है। लेकिन उस सशक्तीकरण की जमीन पर पुरुषों का ही हक होता है। मगर राहुल गांधी जैसा सवाल भाजपा महिलाओं से कभी नहीं कर पाई कि आप केवल मां, बहन, बेटी या पत्नी ही क्यों रहें, आपका महत्व केवल इन रिश्तों से नहीं है, बल्कि इनसे बढ़कर आपकी अपनी अलग पहचान और स्वतंत्र अस्तित्व है। राहुल गांधी ने पितृसत्तात्मक समाज की मानसिकता के कुछ उदाहरण पेश किए, जो संयोग से भाजपा और संघ नेताओं के ही निकले। जैसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का पचास करोड़ की गर्लफ्रेंड और दीदी ओ दीदी जैसा बयान, मोहन भागवत का यह कहना कि भारत में रेप नहीं होते, इंडिया में होते हैं, मनोहर लाल खट्टर का बयान कि 80 प्रतिशत रेप लड़कियों के कारण ही होते हैं, ऐसे सारे वीडियो राहुल गांधी ने दिखाए और फिर एक सुलगता सवाल छोड़ा कि जंतर-मंतर प्रदर्शन में लड़कियों के गाली देने पर नरेन्द्र मोदी ने इसे सांस्कृतिक झटका बताया लेकिन लड़कों के गाली देने पर कुछ नहीं कहा, ऐसा क्यों। जनता इन बयानों को पहले सुन चुकी हैं, इन वीडियोज को देख चुकी है, लेकिन अलग-अलग वक्त और मौकों पर इन्हें देख कर थोड़ी बहुत चर्चा होती थी, फिर महिला सशक्तीकरण के दो-चार जुमलों के साथ बात वहीं खत्म हो जाती थी। मगर पुणे में राहुल गांधी ने विमर्श को एकदम नयी दिशा दे दी। उन्होंने भाजपा और संघ नेताओं के उदाहरण सामने रखकर कहा कि हमें ऐसा हिंदुस्तान नहीं चाहिए। ये मनुस्मृति वाला हिंदुस्तान है। पाठक जानते हैं कि मनुस्मृति को लेकर भी आजादी के समय से कांग्रेस और संघ के बीच संघर्ष चलता रहा है। संघ का बस चलता तो संविधान लागू ही नहीं होता और मनुस्मृति ही देश में लागू हो जाती। संघ के इस एजेंडे को पूरा करने के लिए भाजपा अब भी लगातार कोशिश कर रही है। याद कीजिए 2024 का लोकसभा चुनाव जब भाजपा ने चार सौ पार का नारा दिया ही इसलिए था ताकि वो संविधान बदल सके। जब भाजपा इसमें नाकाम रही तो कभी संविधान हत्या विरोधी दिवस, कभी वंदे मातरम का कार्ड खेलकर कांग्रेस को राष्ट्रविरोधी बताने की कोशिशें की और अब भी कर रही है। लेकिन राहुल गांधी भाजपा की चालों का जवाब देने की जगह उन मुद्दों को राजनैतिक बहस के केंद्र में ला रहे हैं, जो सीधे आम लोगों से जुड़े हैं। पेपर लीक, बेरोजगारी इन सबके साथ अब राहुल गांधी ने लड़कियों के हक की बात बिल्कुल नए अंदाज में उठाई है। राहुल मनुस्मृति का जिक्र कर सीधे उस जड़ पर प्रहार कर रहे हैं, जहां से लड़कियों को लड़कों के नीचे रखने और समाज में दबाने की शुरुआत हुई। भाजपा के लिए राजनीति का मतलब सांप्रदायिक ध्रुवीकरण, उग्र राष्ट्रवाद, हिंदुत्व का गौरवगान यही सब है, राहुल गांधी ने भाजपा को इस बार उसके पाठ्यक्रम के बाहर के सवालों में उलझा दिया। अब भाजपा को बताना ही पड़ेगा कि उसके लिए संविधान प्राथमिकता है या मनुस्मृति। अगर संविधान प्राथमिकता है, तो फिर प्रधानमंत्री मोदी को केवल लड़कियों के गाली देने से दिक्कत क्यों हुई, लड़कों के लिए यही बात उन्होंने क्यों नहीं की। भाजपा को बताना पड़ेगा कि अगर संविधान प्राथमिकता है, तो मोदी-शाह एक भी दिन सदन में आकर क्यों नहीं बता पाए कि जंतर-मंतर पर लाठी चार्ज और पैलेट गन चलाने के आदेश किसने दिए। बीजेपी को बताना पड़ेगा कि एक साथ दो पीढ़ियों यानी जेन जी और जेन अल्फा को शिक्षा जैसे बुनियादी अधिकार के लिए सड़कों पर क्यों उतरना पड़ा है। क्या यही उसके बारह सालों के शासन का हासिल है कि उसने देश के बच्चों को संघर्ष करने पर मजबूर कर दिया। ऐसे सारे सवाल अब देश में गूंज रहे हैं। राहुल ने छात्रों की गूंज में महिलाओं की बराबरी का एक ऐसा राग छेड़ दिया है, जिसके सुर पकड़ पाना भाजपा के लिए लगभग नामुमकिन है। अगर भाजपा ऐसी कोशिश करेगी तो उसके पुराने तार सब टूट जाएंगे। क्योंकि संघ लड़के और लड़कियों की ऐसी बराबरी कभी मंजूर नहीं करेगा। संघ हिंदुस्तान को मध्ययुग में ले जाने का हिमायती है, जहां वर्ण व्यवस्था भी चले और मनुस्मृति भी मान्य हो।

# प्रीति मेरे करियर का सबसे यादगार किरदार

## महिमा मकवाना



अभिनेत्री महिमा मकवाना इन दिनों सीरीज श्मुसाफिर कैफेश को लेकर सुर्खियों में हैं। हाल ही में उन्होंने अपने करियर सफर पर बात की। जानिए क्या कहा? कुछ किरदार सिर्फ पर्दे पर नहीं रहते, कलाकार के भीतर भी बस जाते हैं। अभिनेत्री महिमा मकवाना के लिए श्मुसाफिर कैफेश की श्प्रीतिश ऐसा ही किरदार रही। महिमा कहती हैं कि इस रोल ने उन्हें खुद को स्वीकार करना और खुद से प्यार करना सिखाया। अमर उजाला से बातचीत में उन्होंने अपने करियर, इंटीमेट सीन्स, टीवी से फिल्मों तक के सफर और मसूरी में अपने डॉग के नाम पर श्परिंदा कैफेश खोलने के सपने पर खुलकर बात की। श्स्क्रिप्ट पढ़ते ही प्रीति के किरदार से हो गया था प्यारश महिमा कहती हैं कि श्मुसाफिर कैफेश की स्क्रिप्ट पढ़ते ही उन्हें लगा कि वह प्रीति का किरदार निभाना चाहती हैं। श्जब मैंने पहली बार स्क्रिप्ट पढ़ी, तभी मुझे लगा कि मुझे प्रीति ही बनना है। वह बहुत एस्पिरेशनल है। सोलो ट्रैवल करती है, अपने आसपास के लोगों को अपनापन महसूस कराती है, बहुत अच्छी लिस्नर है और बेहद इमोशनली इंटेलिजेंट है। अगर मुझे कभी असल जिंदगी में प्रीति मिले, तो मैं उससे दोस्ती जरूर करना चाहूंगी। वह ऐसी इंसान है, जो आपको रास्ता भी दिखाएगी और यह भी महसूस कराएगी कि आप अकेले नहीं हैं।श श्इस किरदार ने मुझे खुद को स्वीकार करना और खुद से प्यार करना सिखायाश महिमा के लिए श्प्रीतिश सिर्फ एक रोल नहीं रही। वह मानती हैं कि इस किरदार ने उनकी निजी जिंदगी पर भी असर डाला ..श्मुझे पहले खुद को स्वीकार करना बहुत मुश्किल लगता था। आसपास का शोर और लोगों की बातें कहीं न कहीं असर करती थीं। लेकिन प्रीति ने मुझे खुद को एक्सेप्ट करना सिखाया। उसने मुझे खुद से प्यार करना सिखाया। मुझे एहसास हुआ कि जब तक आप खुद को आजादी नहीं देंगे... तब तक आप अपने आसपास के लोगों को भी आजादी महसूस नहीं करा पाएंगे। मेरे लिए इससे बड़ा गिफ्ट कोई नहीं हो सकता। मैं यह सिर्फ फिल्म प्रमोट करने के लिए नहीं कह रही हूं। मुझे सच में लगता है कि प्रीति मेरे करियर का सबसे यादगार किरदार रहेगी।श श्25 की उम्र तक लगा था, जिंदगी के सारे जवाब मिल जाएंगेश जिंदगी और करियर के इस सफर ने महिमा का नजरिया भी बदला है। वह कहती हैं कि उम्र के साथ हर सवाल का जवाब नहीं मिलता, लेकिन सोच जरूर बदल जाती है श्मुझे लगता था कि 25–26 साल की उम्र तक सब कुछ समझ आ जाएगा। लेकिन ऐसा नहीं होता। जिम्मेदारियां बढ़ती रहती हैं। जिंदगी में शोर हमेशा रहेगा। फर्क सिर्फ इतना है कि अब मैंने उसके बीच खुद को संभालना सीख लिया है। डर और इंसिक्योरिटी कई बार हमारे दिमाग में ऐसी कहानियां बना देते हैं, जो असल में होती ही नहीं हैं। इसलिए उन विचारों को ज्यादा ताकत नहीं देनी चाहिए। यह सुनने में थोड़ा फिलॉसॉफिकल लगता है, लेकिन यही मेरी रोज की प्रैक्टिस है।श श्मेडिटेशन ने मुझे जिंदगी के शोर से बाहर निकलना सिखायाश। महिमा बताती हैं कि इस सीरीज की शूटिंग के दौरान उन्होंने मेडिटेशन शुरू किया और धीरे–धीरे इसका असर अपनी जिंदगी में महसूस किया श्मैं यह नहीं कहूंगी कि मेडिटेशन ने मेरे जीवन का शोर पूरी तरह खत्म कर दिया, लेकिन उसने उसे काफी कम जरूर कर दिया। अब मैं खुद के पास जल्दी लौट पाती हूं।श श्एक जैसे किरदार नहीं करना चाहती, अच्छे काम को देती हूं प्राथमिकताश करियर के फैसलों को लेकर भी महिमा जल्दबाजी में यकीन नहीं रखतीं श्बहुत सारी चीजें हमारे कंट्रोल में नहीं होतीं। लेकिन मेरे फैसले हमेशा सोच–समझकर होते हैं। आखिर में मैं अपने इंस्टिंक्ट की सुनती हूं। मेरी क्लैरिटी बस इतनी है कि मुझे अच्छे लोगों के साथ अच्छा काम करना है। प्लेटफॉर्म मेरे लिए मायने नहीं रखता। अगर दर्शक आपसे जुड़ जाते हैं, तो वही सबसे बड़ी बात है। सीरीज श्शो टाइमश के बाद मेरे पास कई एक जैसे ऑफर आए, लेकिन मैं खुद को दोहराना नहीं चाहती थी। मैं ऐसे किरदार करना चाहती हूं, जिनमें कुछ नया हो और कुछ मीनिंग हो। जब तक मैं खुद किसी किरदार पर भरोसा नहीं करूंगी, उसे ईमानदारी से निभा भी नहीं पाऊंगी।श श्इंटीमेट सीन से नहीं, डायरेक्टर के नजरिए से फर्क पड़ता हैश ओटीटी पर इंटीमेट सीन्स को लेकर चल रही बहस पर भी महिमा अपनी बात बेबाकी से रखती हैं श्मेरे पास ऐसे ऑफर्स आए हैं, जिनमें मैं सहज नहीं थी। लेकिन मैंने हमेशा खुद से पूछा कि क्या यह सीन कहानी के लिए जरूरी है? क्या इससे कहानी आगे बढ़ती है? अगर जवाब हां है, तभी मैं उसका हिस्सा बनना चाहूंगी। मेरे लिए स्क्रिप्ट से ज्यादा जरूरी डायरेक्टर का नजरिया है। अगर किसी महिला को सिर्फ ऑब्जेक्टिफाई करने के लिए कोई सीन रखा गया है, तो उस नजरिए को बदलने की जरूरत है। अगर मैं असहज हूं, तो मुझे अपनी बात जरूर रखनी चाहिए। हर फैसला आसान नहीं होता, लेकिन आखिर में वही करना चाहिए, जिसमें आप सहज हों।श श्टीवी से फिल्मों तक का सफर आसान नहीं था, मुझे 15 साल लग गएश सीरीज में में महिमा मकवाना और विक्रांत मैसी पहली बार साथ नजर आए हैं। दोनों ने अपने अभिनय करियर की शुरुआत टेलीविजन से की थी। महिमा मानती हैं कि आज इंडस्ट्री का नजरिया बदल रहा है और यह प्रोजेक्ट भी उसी बदलाव की एक मिसाल है। श्मेरे लिए विक्रांत मैसी, सुशांत सिंह राजपूत, मृणाल ठाकुर और शाहरुख खान हमेशा प्रेरणा रहे हैं। आप टीवी से आए हों, थिएटर से या कहीं और से... अगर आपके पास मेहनत, धैर्य और साफ विजन है, तो कुछ भी नामुमकिन नहीं है। मुझे यहां तक पहुंचने में 15 साल लगे हैं। कई बार मुश्किल फैसले लेने पड़े। लेकिन अब वह दौर चला गया है, जब टीवी एक्टर्स को कमतर समझा जाता था। हमारा प्रोजेक्ट भी उसी बदलाव की मिसाल है।श श्मसूरी में अपने डॉग के नाम पर खोलना चाहती हूं श्परिंदा कैफेश्श बातचीत के आखिर में महिमा अपने उस सपने का जिक्र करती हैं, जो फिल्मों से नहीं, पहाड़ों से जुड़ा है .. श्मैं पहाड़ों में अपना एक कैफे खोलना चाहती हूं। उसका नाम श्परिंदा कैफेश होगा, जो मेरे डॉग के नाम पर होगा। और वह मसूरी में ही होगा। मुंबई के बाद अगर किसी जगह ने मुझे घर जैसा एहसास कराया है, तो वह मसूरी है। वहां सुबह पांच बजे भी शूटिंग के लिए उठना पड़ता था, लेकिन कभी थकान महसूस नहीं हुई। पहाड़ों का अपना अलग ही नशा है।श




साल 1955 तमिलनाडु के कोयंबटूर में फिल्म श्आजादश की शूटिंग चल रही थी। इसी दौरान फिल्म प्रोड्यूसर एसएस. वासन ने दिलीप कुमार की मुलाकात एक मशहूर ज्योतिषी से कराई। ज्योतिषी ने दिलीप कुमार का चेहरा देखा, हाथ की रेखाएं पढ़ीं और फिर उनकी कुंडली बनाई। इसके बाद उन्होंने ऐसी भविष्यवाणी की, जिसे सुनकर खुद दिलीप कुमार भी हैरान रह गए। ज्योतिषी ने कहा कि दिलीप कुमार की शादी 40 साल की उम्र के बाद होगी। उनकी दुल्हन उनसे करीब आधी उम्र की होगी। इतना ही नहीं, वह भी फिल्मों से जुड़ी होगी। भविष्यवाणी यहीं खत्म नहीं हुई। ज्योतिषी ने यह भी कहा कि उस महिला को एक गंभीर बीमारी भी होगी। यह सुनकर दिलीप कुमार ने कहा था, "मैं तो कभी फिल्म वाली लड़की से शादी ही नहीं करूंगा।" उस वक्त दिलीप कुमार ने इस भविष्यवाणी को गंभीरता से नहीं लिया था, लेकिन करीब 11 साल बाद ज्योतिषी की कही लगभग हर बात सच हो गई। 1966 में 44 साल के दिलीप कुमार ने 22 साल की एक्ट्रेस सायरा बानो से निकाह किया। आज सायरा बानो के 82वें जन्मदिन पर जानते हैं उनकी जिंदगी और दिलीप कुमार के साथ उनकी प्रेम कहानी के कुछ अनसुने किस्से। दिलीप कुमार के चलते उर्दू सीखनी शुरू की सायरा बानो का जन्म 1944 में मशहूर अदाकारा नसीम बानो और प्रोड्यूसर मियां एहसान–उल–हक के घर हुआ था। दिलचस्प बात ये है कि जिस साल सायरा दुनिया में आईं, उसी साल दिलीप कुमार की पहली फिल्म ज्वार भाटा (1944) रिलीज हुई थी।सायरा करीब 6 साल की थीं, जब उनको पढ़ाई के लिए यूनाइटेड किंगडम भेज दिया गया। लंदन के मशहूर एलीट स्कूल क्वीन्स हाउस में उनकी पढ़ाई हुई। छुट्टियां होतीं, तो सायरा हिंदुस्तान आती थीं। सायरा बानो की मां नसीम बानो को भारतीय सिनेमा की पहली महिला सुपरस्टार कहा जाता है। नसीम बानो ने खून का खून, खान बहादुर और पुकार जैसी कई फिल्मों में काम किया था। सायरा बानो की मां नसीम बानो को भारतीय सिनेमा की पहली महिला सुपरस्टार कहा जाता है। नसीम बानो ने खून का खून, खान बहादुर और पुकार जैसी कई फिल्मों में काम किया था। ऐसी ही एक छुट्टी में 12 साल की सायरा मां के साथ घर पर फिल्म आन देख रही थीं। फिल्म महबूब खान ने बनाई थी और हीरो थे दिलीप कुमार। दिलीप साहब की अदाकारी ने सायरा के दिल पर ऐसा असर किया कि फिल्म खत्म होते ही उन्होंने मां के सामने अपनी ख्वाहिश जाहिर कर दी। सायरा ने साफ कह दिया– अगर शादी करेंगी, तो सिर्फ दिलीप कुमार से। लंदन में पढ़ाई के दौरान भी सायरा बानो के दिल में एक ही ख्वाब था– एक दिन वह मिसेज दिलीप कुमार बनेंगी। सायरा ने दैनिक भास्कर को दिए इंटरव्यू में यह बात बताई थी। सायरा की मां नसीम बानो उनसे कहती थीं कि अगर उन्हें दिलीप कुमार की पत्नी बनना है, तो पहले उनकी पसंद–नापसंद और शौक को समझना होगा। बस फिर क्या था, सायरा ने भी दिलीप साहब की पसंद की चीजें सीखनी शुरू कर दीं। जब उन्हें मालूम हुआ कि दिलीप कुमार को उर्दू और शायरी बेहद पसंद है, तो सायरा ने बाकायदा मौलवी साहब से उर्दू पढ़ना शुरू कर दिया। इतना ही नहीं, दिलीप साहब को सितार पसंद था, तो सायरा ने सितार सीखने की कोशिश भी की। काम करने को लेकर दिलीप कुमार ने सफेद बाल दिखा दिए सायरा की मां नसीम एक्ट्रेस थीं। दिलीप कुमार की उनसे मुलाकात होती रहती थी। वो सायरा के बारे में भी जानते थे। जब सायरा ने फिल्म इंडस्ट्री में कदम रखने का फैसला किया और निर्माता एस. मुखर्जी ने यह बात दिलीप कुमार से कही तो उन्होंने कहा था कि सायरा को फिल्मों में करियर बनाने से रोका जाना चाहिए। 1960 के दशक की शुरुआत में फिल्म 'दिल दिया दर्द लिया' की कास्टिंग शुरू होने वाली थी। इसी दौरान निर्माता एस. मुखर्जी ने दिलीप कुमार से कहा था, "यूसुफ, यह लड़की आपके साथ काम करने के लिए पागल है।" जिस पर दिलीप कुमार ने अपने सफेद–काले बालों में हाथ फेरकर सायरा से कहा था, "क्या तुमने मेरे ये सफेद बाल देखे हैं? मैं तुमसे बहुत ज्यादा उम्र का हूं और मैं सुअर की तरह खाता हूं!" शम्मी कपूर की डांट सुनकर सायरा रोने लगी थीं सायरा बानो की पहली फिल्म 1961 में रिलीज हुई 'जंगली' थी। हालांकि फिल्मों में कदम रखने का फैसला उनके लिए बिल्कुल आसान नहीं था। परिवार, खासकर उनकी मां नसीम बानो, इसके खिलाफ थीं, लेकिन सायरा ने अपने इस ख्वाब को छोड़ना मंजूर नहीं किया। उन्होंने स्कूल की छुट्टियों के दौरान 'जंगली' की शूटिंग शुरू की। कुछ महीने शूटिंग करने के बाद वह वापस लंदन चली गईं और अपनी पढ़ाई पूरी करने लगीं। लेकिन फिल्म की शूटिंग से लेकर रिलीज तक, कुछ ऐसे वाकये हुए, जिन्होंने सायरा को रुला दिया। दरअसल, सायरा बानो ने फिल्म 'जंगली' साइन तो कर ली थी, लेकिन उन्हें एक्टिंग का कोई तजुर्बा नहीं था। शूटिंग के पहले दिन वह कश्मीर के शालीमार बाग पहुंचीं। वहां हजारों लोग शूटिंग देखने के लिए जमा थे। सायरा वैसे भी काफी शर्मीली थीं। उन्हें 'कश्मीर की कली' गाने की एक लाइन पर घूमकर लिप–सिंक करना था, लेकिन वह बार–बार गलती कर रही थीं। लिप–सिंक पर ध्यान देतीं, तो गलत दिशा में घूम जातीं।

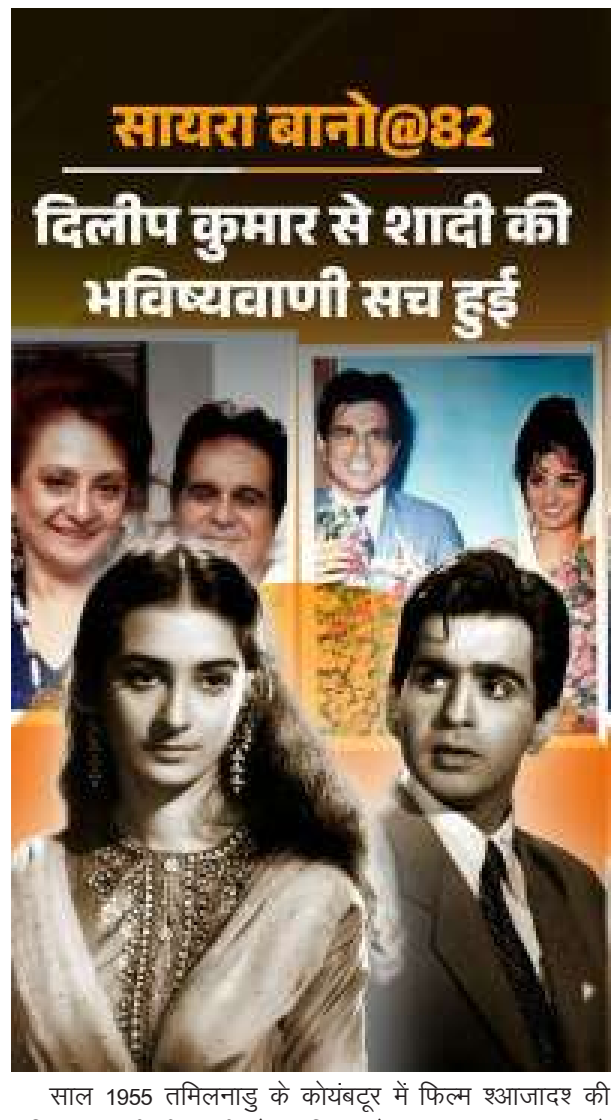




टीवी एक्ट्रेस और श्रोडीज 8श की विनर आंचल खुराना ने पंजाब की मशहूर एक्ट्रेस शहनाज गिल पर कई गंभीर आरोप लगाए हैं। टेली मसाला को दिए इंटरव्यू में आंचल ने दावा किया है कि शहनाज असल में वैसी नहीं हैं जैसी सोशल मीडिया पर दिखाई देती हैं। वे केवल श्क्यूटश और भोली–भाली बनने का दिखावा करती हैं, जबकि असल में वे काफी चालाक और बदतमीज हैं। आंचल के मुताबिक, शहनाज और उनके भाई की अच्छी पब्लिक इमेज सिर्फ वीडियोज की चालाकी से की गई एडिटिंग की वजह से बनी हुई है। वीडियो एडिट करके बनाई गई अच्छी इमेज इंटरव्यू में 35 साल की आंचल खुराना ने कहा कि शहनाज खुद में ही खोई रहने वाली और कम ष्फ वाली इंसान हैं। उनके वीडियोज को इस तरह से एडिट किया जाता है कि वे बेहद प्यारी और मजाकिया लगें। आंचल ने दावा किया कि वे खुद 8 महीने पंजाब में रही हैं और वहां शहनाज के बैकग्राउंड को लेकर कोई अच्छी बात नहीं बोली जाती। श्बिग बॉस 13श और श्मुझसे शादी करोगेश जैसे शोज में उन्हें ऐसा दिखाया गया जैसे वे बहुत अच्छी हैं, जबकि सच्चाई इससे अलग है। भाई शहबाज को बताया बदतमीज शहनाज के भाई शहबाज बदेशा पर बात करते हुए आंचल ने कहा कि शहबाज बेहद बदतमीज इंसान हैं।




हिंदी सिनेमा की मशहूर अदाकाराओं में शामिल काजोल ने 90 के दशक में बड़े पर्दे पर ऐसी छाप छोड़ी थी जिसकी गूंज आज तक सुनाई देती है. फिल्मी घराने से ताल्लुक रखने वाली काजोल कभी एक्ट्रेस नहीं बनना चाहती थीं, लेकिन किस्मत को ये ही मंजूर था. 90 के दशक की शुरुआत में उनका एक्टिंग करियर शुरू हुआ और देखते ही देखते वो न सिर्फ उस दौर की बल्कि हिंदी सिनेमा के इतिहास की सबसे बेहतरीन अभिनेत्रियों में अपना नाम लिखाने में शुमार हो गईं. अपने लंबे और सफल करियर में काजोल ने एक से बढ़कर एक फिल्मों से फैंस का दिल जीता और हर किरदार से दर्शकों के दिलों में जगह बना ली. आज भी काजोल फिल्मी दुनिया में काम कर रही हैं और आज के दौर की एक्ट्रेसेस के लिए मिसाल पेश कर रही हैं. आज एक्ट्रेस 52 साल की हो चुकी हैं. इस मौके पर हम आपको बताने जा रहे हैं उनकी लाइफ से जुड़ी कुछ दिलचस्प और खास बातों के बारे में. माता–पिता हुए अलग, नानी ने की परवरिश काजोल का जन्म 5 अगस्त 1974 को मुंबई में हुआ था. उनके पिता शोमू मुखर्जी मशहूर फिल्ममेकर थे, जबकि उनकी मां तनुजा गुजरे दौर की दिग्गज एक्ट्रेस हैं. दोनों ने एक साल के अफेयर के बाद शादी कर ली थी, हालांकि जल्द ही दोनों अलग हो गए थे, लेकिन उनका तलाक नहीं हुआ था. पैरेंट्स के अलग होने के चलते काजोल की परवरिश उनकी नानी ने की थी. दादी के लिए स्कूल से भाग गई थीं काजोल चाहे काजोल की परवरिश उनकी नानी ने की हो, लेकिन वो अपनी दादी के भी करीब रही थीं. इससे जुड़ा एक दिलचस्प किस्सा है. काजोल ने पंचगनी के सेंट जोसेफ कॉन्वेंट बोर्डिंग स्कूल से पढ़ाई की थी. लेकिन, एक बार वो बोर्डिंग स्कूल से अपनी दादी के लिए भाग गई थीं.

## बच्चे को बार-बार होता है कोल्ड कफ तो जानिए 4 कारण

छोटे बच्चों की इम्यूनिटी कमजोर होती है जिसके कारण वह बहुत जल्दी बीमार पड़ने लगते हैं। खासकर 2 साल के बाद बच्चों को कोल्ड–कफ जैसी परेशानी होने लगती है। बार–बार छींकने के कारण उनका बुरा हाल हो जाता है कई बार इसके कारण बच्चे को नींद भी नहीं आती और सांस लेने में भी तकलीफ होती है। इसके अलावा एनर्जी की कमी और शरीर में थकान भी बच्चे को रहती है। इन सभी समस्याओं के कारण बच्चे के लाइफस्टाइल पर भी असर पड़ता है। कई बार सामान्य कोल्ड समझकर पेरेंट्स उन्हें दवाई दे देते हैं लेकिन अगर लगातार बच्चे को कोल्ड कफ रहता है तो इसके ये कारण भी हो सकते हैं। आइए जानते हैं ....

एलर्जी

बार–बार बच्चे को जुकाम होना, नाक बहना, आंखों से पानी आना एलर्जिक कारण भी हो सकता है। अगर बच्चे को बहुत जल्दी यह परेशानी होती है तो उन्हें समय पर डॉक्टर को जरुर दिखाएं। यदि समय पर बच्चों को ट्रीटमेंट न दिया जाए तो उन्हें ज्यादा समस्या हो सकती है। ऐसे में जिससे बच्चों को एलर्जी है उन्हें उस चीज से दूर रखें। इसके अलावा बच्चे को रोज रात में स्टीम दें।

सीजनल फ्लू

बदलता मौसम भी बच्चे के कोल्ड कफ का कारण हो सकते हैं। छोटे बच्चे कोल्ड कफ से बहुत जल्दी प्रभावित होते हैं। सर्दियों में मुख्य तौर पर बच्चों को यह समस्या परेशान कर सकती है क्योंकि इस दौरान अच्छे से गर्म कपड़े न पहनना, जंक फूड खाना, साफ–सफाई का ध्यान न रखना और हरी सब्जियों का सेवन न करना कोल्ड कफ जैसी परेशानियां खड़ी कर सकते हैं।

इम्यूनिटी कमजोर

यदि बच्चों की इम्यूनिटी कमजोर हो तो भी वह बार–बार बीमार पड़ते हैं और उन्हें सीजनल फ्लू, कोल्ड–कफ रहता है। अगर मौसम बदलने पर बच्चों को सर्दी जुकाम होता है तो इसका अर्थ है कि उनकी इम्यूनिटी कमजोर है। ऐसे में जरुरी है कि आप उन्हें इम्यूनिटी बढ़ाने वाली चीजें दे। आप बच्चे को रोज अदरक के साथ शहद चटाएं। इसके अलावा किसी भी तरह की ठंडी चीज से उन्हें दूर रखें।

जेनेटिक

अगर घर में किसी बड़े जैसे पेरेंट्स, दादा–दादी या फिर नाना–नानी को एलर्जी है तो भी बच्चे इसका शिकार हो सकते हैं। अगर परिवार में किसी को अस्थमा हो तो बच्चों में भी इसके लक्षण नजर आ सकते हैं। इससे बचाने के लिए आप उन्हें समय–समय पर डॉक्टर से चेक करवाते रहे।

## मग पर लगे कॉफी दाग को हटाएं कुछ इस तरह

सुबह के समय चाय या कॉफी पीना अधिकतर लोगों की आदत होती है। लेकिन कई बार ऐसा होता है कि चाय या कॉफी के दाग मग पर लग जाते हैं। जो आसानी से साफ नहीं होते हैं। बाद में, इन दागों की वजह से मग गंदे नजर आते हैं। इसलिए, इन्हें साफ करने के लिए आपको अतिरिक्त उपाय अपनाने की जरूरत होती है। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको कुछ ऐसे ही आसान तरीकों के बारे में बता रहे हैं, जिन्हें अपनाकर आप मग पर लगे चाय या कॉफी के दाग को आसानी से साफ कर सकते हैं–

बेकिंग सोडा से करें सफाई

बेकिंग सोडा का इस्तेमाल हम सभी अपनी किचन में करते ही हैं, लेकिन वास्तव में यह क्लीनिंग करने में भी बेहद मददगार है। अगर मग पर चाय या कॉफी का दाग लग गया है, तो ऐसे में आप बेकिंग सोडा में थोड़ी मात्रा में पानी मिलाकर पेस्ट बना लें। अब इस पेस्ट को दाग वाले एरिया पर लगाएं और मुलायम कपड़े या स्पंज से धीरे से रगड़ें। तैयार

व्हाइट विनेगर को काम में लाएं

मग को साफ करने के लिए आप कप या मग में व्हाइट विनेगर और पानी को बराबर मात्रा में भरें। अब इसे कुछ घंटों या रात भर के लिए ऐसे रहने दें। अंत में, दागों को ब्रश या स्पंज की मदद से साफ़ करें और पानी से उसे अच्छी तरह धो लें।

नींबू रस से करें सफाई

नींबू के रस से भी आसानी से क्लीनिंग की जा सकती है। दरअसल, नींबू के रस के एसिडिक नेचर के कारण दाग को साफा करना काफी आसान हो जाता है। आप नींबू के रस को दागों पर लगाएं। अब आप इसे कुछ देर के लिए ऐसे ही छोड़ दें और फिर धीरे से रगड़ें। बाद में आप मग को पानी से अच्छी तरह से धो लें।

नमक का करें इस्तेमाल

नमक भी मग पर लगे दागों को आसानी से क्लीन कर सकता है। यह एक सस्ता और अच्छा उपाय है, जो मग को साफ करने में आपके काम आ सकता है। आपको बस इतना करना है कि आप दाग वाले एरिया पर नमक छिड़कें, और फिर दाग को साफ़ करने के लिए एक स्पंज का इस्तेमाल करें। इससे आपको दाग हटाने में काफी मदद मिलती है।

# बच्चों में कमजोर इम्यूनिटी होने पर दिखाई देते हैं ऐसे लक्षण, पेरेंट्स ना करें अनदेखा

मौसम में बदलाव होते ही कई बच्चे बीमार पड़ जाते हैं। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि बच्चे की इम्यूनिटी कमजोर होती है। लेकिन कई पेरेंट्स को यह बात पता ही नहीं होती है, वहीं बच्चे बार–बार बीमार पड़ते हैं। ऐसे में पेरेंट्स को बच्चे की कमजोर इम्यूनिटी के लक्षणों को पहचानना चाहिए। इसके लिए आपको बच्चों के अंदर होने वाले उन लक्षणों को पहचानना होता है। जिससे उनकी कमजोर इम्यूनिटी के बारे में पता चलता है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कमजोर इम्यूनिटी के लक्षणों और संकेतों के बारे में बताने जा रहे हैं।

बार–बार बीमार पड़ना

अगर आपका भी बच्चा बार–बार बीमार पड़ रहा है। बच्चे की तबियत यदि अक्सर खराब रहती हैं, तो पेरेंट्स को समझ जाना चाहिए कि उसकी इम्यूनिटी कमजोर है। क्योंकि बच्चा जब बार–बार बीमार पड़ता है, तो इसका मतलब है कि उसकी एंटीबॉडी रोग से लड़ने में सक्षम नहीं है। हालांकि बच्चों को साल में 3–4 बार जुकाम होना आम बात है। लेकिन इससे ज्यादा बार बच्चे का बीमार पड़ना उसकी कमजोर इम्यूनिटी की ओर इशारा करता है।

कमजोर पाचन तंत्र

अगर आपके बच्चे का भी पेट अक्सर खराब रहता है, या फिर पेट संबंधित किसी न किसी परेशानी से परेशान रहता है। तो यह उसकी कमजोर इम्यूनिटी की ओर संकेत करता है। इम्यूनिटी कमजोर होने पर बच्चे को गैस, कब्ज आदि की शिकायत बनी रहती है। क्योंकि पेट में अच्छे व बुरे दोनों तरह के बैक्टीरिया पाए जाते हैं। जो बैक्टीरिया पाचन तंत्र को स्वस्थ रखते हैं, उनको गुड बैक्टीरिया कहा जाता है। गुड बैक्टीरिया संक्रमण से लड़ने में मददगार साबित होता है। ऐसे में अगर बच्चा किसी भी तरह की संक्रमण की चपेट में आता है, तो यह साफ है कि उसकी प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर है।

बार–बार संक्रमण होना

आमतौर पर बच्चे आसानी से संक्रमण की चपेट में आ जाते हैं। ऐसे में अगर आपके बच्चे को भी बार–बार संक्रमण हो रहा है। तो यह उसके स्वास्थ्य के लिए सही नहीं है। क्योंकि बच्चे को बार–बार संक्रमण नहीं होना चाहिए। इससे यह साफ पता चलता है कि बच्चे की इम्यूनिटी कमजोर है। कमजोर इम्यूनिटी के कारण बच्चे को अस्थमा, निमोनिया, साइनसाइटिस और कान में इंफेक्शन जैसी बीमारियां हो जाती है। ऐसे में पेरेंट्स को इस बात की भी जानकारी होना जरूरी है कि यदि बच्चे की एंटीबॉडी मजबूत नहीं होगी। तो उसको इंफेक्शन से बचाना मुश्किल होगा। इसलिए बच्चे की इम्यूनिटी को बूस्ट करने पर ध्यान देना चाहिए।

अक्सर थकान महसूस करना

अगर आपका बच्चा थोड़ी देर खेलने के बाद, सीढ़ियां चढ़कर या फिर थोड़ा सा दौड़ने–भागने में थकान महसूस करने लगता है। तो पेरेंट्स को समझ जाना चाहिए कि बच्चे की इम्यूनिटी कमजोर है। जिन बच्चों की इम्यूनिटी कमजोर होती है, वह अपना अधिकतर समय बैठे–बैठे गुजार देते हैं। क्योंकि इस तरह के बच्चों में फिजिकल एक्टिविटी काफी कम होती है। ऐसे में पेरेंट्स को चाहिए कि वह अपने बच्चे को एक्टिव रखने का प्रयास करें और उन्हें एनर्जेटिक बनाएं। बच्चे को एनर्जेटिक बनाए रखने के लिए आप उनकी डाइट में हेल्दी फ्रूट्स और सब्जियां शामिल करें।

चोट ठीक होने में समय लगना

बता दें कि जिन बच्चों की इम्यूनिटी कमजोर होती है। उनकी चोट को सही होने में समय लगता है। हेल्थ एक्सपर्ट्स की मानें तो यदि बच्चे की चोट को सही होने में ज्यादा समय लगता है, तो इसके पीछे उनकी कमजोर इम्यूनिटी हो सकती है। क्योंकि अगर बच्चे की चोट आदि सही होने में अधिक समय लगता है, तो वह चोट संक्रमण में भी बदल सकती है। जो कि बच्चे के स्वास्थ्य के लिए सही नहीं है। ऐसे में पेरेंट्स को बच्चे की इम्यूनिटी बूस्ट करने पर ध्यान देना चाहिए।

इन बातों का रखें खास ख्याल

अगर बच्चे का स्वास्थ्य बार–बार खराब हो रहा है, तो उसे डॉक्टर को जरूर दिखाएं।

बच्चों में बेहतर रोग प्रतिरोधक क्षमता को विकसित करने के लिए शुरूआती 6 महीने सिर्फ मां का दूध पिलाएं।

घातक बीमारियों के प्रति प्रतिरोधकता विकसित करने के लिए बच्चे का वैक्सीनेशन होना जरूरी है। इस वैक्सीनेशन में मुख्य रूप से काली खांसी, खसरा, मेनिन्जाइटिस, पोलियो और एन्सेफलाइटिस शामिल हैं।

अच्छी रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए बच्चे को अच्छा और स्वस्थ आहार देना जरूरी होता है।

बेहतर इम्यून के लिए प्रोबायोटिक और प्रीबायोटिक मददगार हैं।

बच्चे की साफ–सफाई का विशेष ध्यान रखें।

यदि बच्चे को सांस की बीमारी है, तो घर से बाहर निकलने के दौरान उनको मास्क जरूर पहनाएं।

इन्फ्लूएंजा के लिए रेगुलर वैक्सीनेशन करवाना जरूरी है।

जंक फूड से दूर रखें।

# महिलाओं की तरह पुरुषों को भी कराना चाहिए मैनीक्योर-पैडीक्योर, जानिए इसके फायदे

बाहर के बढ़ते प्रदूषण और तेज धूप की वजह से स्किन डैमेज हो जाती है। महिलाएं बालों और त्वचा की देखभाल और उनसे संबंधित समस्याओं को दूर करने के लिए कई तरह के उपाय आजमाती हैं। साथ ही महिलाएं समय–समय पर मैनीक्योर और पैडीक्योर की मदद से स्किन को एक्सफोलिएट कर स्किन की समस्याओं को दूर करती हैं। हालांकि अधिकतर पुरुष स्किन की देखभाल के लिए समय नहीं निकाल पाते हैं। ऐसे में पुरुषों के हाथ–पैरों की स्किन टैन और बेजान हो जाती है। इसलिए समय–समय पर पुरुषों को भी अपनी स्किन की देखभाल के लिए समय निकालना चाहिए। साथ ही पुरुषों को मैनीक्योर और पैडीक्योर कराना चाहिए। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको पुरुषों के मैनीक्योर और पेडीक्योर कराने के फायदों के बारे में बताने जा रहे हैं।

दूर होती है हाथ–पैरों की गंदगी

बता दें कि मैनीक्योर और पैडीक्योर की मदद से हाथ–पैरों की उंगलियों और अंगूठे में जमने वाली गंदगी को दूर किया जा सकता है। इसके साथ ही हाथ–पैरों के डेड सेल्स को भी हटाया जा सकता है और हाथ–पैरों में बैक्टीरिया के कारण होने वाले इंफेक्शन का खतरा भी कम होता है। मैनीक्योर और पैडीक्योर करने से आप अपने हाथ–पैरों को 10 से 15 मिनट तक हल्के गर्म पानी में रखें। इस पानी में आप लैवेंडर ऑयल भी मिला सकते हैं।

हाथ और पैरों के नाखून की देखभाल

कई बार चोट लगने या किसी अन्य कारण से नाखून टूट जाते हैं। ऐसे में इनमें इंफेक्शन का खतरा बढ़ जाता है। लेकिन मैनीक्योर और पैडीक्योर की मदद से आपके नाखून ट्रिम होते हैं और उनके टूटने की संभावना भी काफी हद तक कम हो जाती है। कई बार नाखूनों को न काटने के कारण वह उंगली के अंदर ही बढ़ने लगते हैं। ऐसे में मैनीक्योर और पैडीक्योर की मदद से आप नाखूनों की लंबाई अपने मुताबिक रख सकते हैं।

पैरों की दुर्गंध होगी दूर

ऑफिस में पुरुषों को अक्सर जूते पहनकर रहना पड़ता है। ऐसे में ज्यादातर समय तक जूते पहने रखने से पैरों की दुर्गंध आने लगती है। क्योंकि लंबे समय तक जूते पहने रहने से पैरों में बैक्टीरिया भी पनपने की संभावना ज्यादा होती है। पुरुषों के पैरों से आने वाली दुर्गंध को पेडीक्योर की मदद से कम किया जाता है। इसके साथ ही हाइजीन भी बनी रहती है।

दूर होता है स्ट्रेस

पेडीक्योर करने के दौरान आपके पैरों के तलवों पर एक्यूप्रेशर होता है। जिसके कारण आपको तनाव और स्ट्रेस से दूर रहने में मदद मिलती है। पैडीक्योर से आप खुद को फ्रेश फील करते हैं।

स्किन में चमक आती है

मैनीक्योर और पेडीक्योर की मदद से आपके हाथ–पैरों के डेड सेल्स हटते हैं। इससे नई त्वचा आती है और स्किन की टैनिंग और कालापन दूर होता है। मैनीक्योर और पैडीक्योर की मदद से स्किन में चमक आती है। ऐसे में आप भी समय–समय पर मैनीक्योर व पैडीक्योर करवा सकते हैं।

# सनबर्न का इलाज करते समय ना करें ये गलतियां

सनबर्न से बचने के लिए हम सभी सनस्क्रीन का इस्तेमाल करते हैं। घर से बाहर निकलने से पहले सनस्क्रीन अवश्य लगाते हैं। लेकिन हम तेज धूप में होते हैं या फिर बहुत अधिक लंबे समय तक बाहर रहते हैं तो ऐसे में सनबर्न हो जाता है। सनबर्न के कारण स्किन में जलन, रेडनेस व इरिटेशन हो सकती है। इस जलन का इलाज करने के लिए हम कई तरीके अपनाते हैं। लेकिन इस दौरान कुछ छोटी–छोटी गलतियां कर बैठते हैं। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको ऐसी ही कुछ गलतियों के बारे में बता रहे हैं–

पेट्रोलियम जेली का उपयोग करना

यह सच है कि धूप से झुलसी स्किन के लिए उसे मॉइश्चराइज करना जरूरी है। कई बार हम अपनी स्किन को मॉइश्चराइज करने के लिए पेट्रोलियम जेली का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन इसका इस्तेमाल करना अच्छा नहीं माना जाता है। इससे आपकी जलन बद से बदतर हो सकती है। इसलिए, कोशिश करें कि आप पेट्रोलियम जेली की जगह वाटर बेस्ड या एलोवेरा–बेस्ड मॉइश्चराइज़र का इस्तेमाल करें।

गर्म पानी से नहाना

अगर आप सनबर्न की समस्या का सामना कर रहे हैं तो ऐसे में आपको बिल्कुल भी गर्म पानी से नहीं नहाना चाहिए। अगर आप गलती से ऐसा करते हैं तो इससे सनबर्न से जुड़ी सूजन और समस्या बढ़ सकती है। कोशिश करें कि आप अपनी स्किन को आराम देने के लिए गुनगुने या ठंडे पानी से स्नान करें।

पर्याप्त मात्रा में पानी न पीना

जब आपको सनबर्न हो जाता है तो उससे आपको डिहाइड्रेशन की समस्या का सामना करना पड़ सकता है। इस स्थिति में अगर आप पानी कम पीते हैं तो आपकी समस्या बद से बदतर हो सकती है। इसलिए, अपनी स्किन का ख्याल रखने के लिए आप पर्याप्त मात्रा में पानी पीएं। यह आपको हाइड्रेटेड रहने में मदद करेगा।

घर लौटकर जब हम अपनी स्किन की क्लीनिंग करते हैं तो उस दौरान आपको हार्श प्रोडक्ट का इस्तेमाल करने से बचना चाहिए। हार्श या अल्कोहल बेस्ड प्रोडक्ट्स आपकी स्किन को और भी अधिक इरिटेट कर सकते हैं। इसलिए ध्यान रखें कि आप जेंटल और केमिकल फ्री प्रोडक्ट्स का ही इस्तेमाल करें।

## संक्षिप्त

### बाजार में उतार-चढ़ाव के बाद लौटी रौनक, सेंसेक्स 287 अंक उछला, निफ्टी 24,300 के पार बंद

नई दिल्ली,एजेंसी। भारतीय शेयर बाजार में मंगलवार को प्रमुख सूचकांक सेंसेक्स और निफ्टी उतार–चढ़ाव के बाद बढ़त के साथ बंद हुए। अंतिम समय की खरीदारी और कच्चे तेल की कीमतों में तेज गिरावट ने निवेशकों के रुझान को शांत किया। दिन के अधिकतर समय नकारात्मक दायरे में रहने के बाद, 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स कारोबार के अंतिम समय में उछला। यह 286.98 अंक, यानी 0.37 फीसदी बढ़कर 77,656.09 पर बंद हुआ। दिन के दौरान सेंसेक्स ने 77,666.39 का उच्च स्तर छुआ। इसने 77,125.91 का निम्न स्तर भी देखा। दिन के कारोबार में प्रमुख सूचकांक 243.2 अंक, यानी 0.31 फीसदी गिरा था। इसी तरह, 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी भी अंतिम समय की खरीदारी से बढ़ा। यह 115.50 अंक, यानी 0.48 फीसदी की बढ़त के साथ 24,334.55 पर बंद हुआ। वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड 3 फीसदी गिरकर 89.32 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल पर आ गया। कच्चे तेल की कीमतों में यह गिरावट बाजार के लिए एक बड़ी राहत थी। जियोजित इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के शोध प्रमुख विनोद नायर ने इस पर टिप्पणी की। उन्होंने बताया कि ईरान के खिलाफ बहुप्रतीक्षित अमेरिकी प्रतिबंध बाजार की उम्मीदों से कम रहे। इस कारण कच्चे तेल की कीमतें और बॉन्ड प्रतिफल अपने हाल के उच्चतम स्तर से नरम हुए। ऊर्जा लागत में इस राहत ने मासिक समाप्ति दिवस पर बाजार को सकारात्मक बंद होने में मदद की। 30 सेंसेक्स कंपनियों में कई शेयरों ने अच्छा प्रदर्शन किया। इंटरग्लोब एविएशन, अडानी पोर्ट्स, इंफोसिस, ट्रेंट, टाइटन और स्टेट बैंक ऑफ इंडिया प्रमुख लाभ पाने वाले रहे। दूसरी ओर, कुछ शेयरों में गिरावट भी दर्ज की गई। इटरनल, एचसीएल टेक, पावर ग्रिड और बजाज फिनसर्व प्रमुख नुकसान उठाने वाले शेयरों में शामिल थे। पिछले सत्र में, 24 अगस्त 2026 को सेंसेक्स 171.72 अंक, यानी 0.22 फीसदी गिरकर 77,369.11 पर बंद हुआ था। निफ्टी भी 32.95 अंक, यानी 0.14 फीसदी फिसलकर 24,219.05 पर समाप्त हुआ था। एशियाई बाजारों में भी सकारात्मक रुझान देखने को मिला। दक्षिण कोरिया का कोस्पी, जापान का निक्केई 225 और शंघाई का एसएसई कंपोजिट सूचकांक बढ़त के साथ बंद हुए। हालांकि, हांगकांग का हैंग सेंग सूचकांक मामूली गिरावट के साथ समाप्त हुआ। यूरोप के बाजार भी सकारात्मक दायरे में कारोबार कर रहे थे। इसके विपरीत, 24 अगस्त 2026 को अमेरिकी बाजार अधिकतर गिरावट के साथ बंद हुए थे। एक्सचेंज के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने 24 अगस्त 2026 को 1,181.66 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे थे। यह निवेश बाजार के लिए एक सकारात्मक संकेत था।

### एफएसएसएआई की सख्ती के बाद हटाने पड़े विज्ञापन

नई दिल्ली,एजेंसी। भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) द्वारा भ्रामक स्वास्थ्य, पोषण, व्यापारिक और उत्पाद संबंधी दावों पर नोटिस जारी किए जाने के बाद कई खाद्य कंपनियों ने सुधारात्मक कदम उठाए हैं। इन कंपनियों ने उपभोक्ताओं को भ्रमित करने वाले दावों को हटाने, विज्ञापनों को वापस लेने, उत्पादों की सूची हटाने और पैकेजिंग में संशोधन करने जैसे कदम उठाए हैं, ताकि खाद्य सुरक्षा नियमों का पालन सुनिश्चित किया जा सके। एफएसएसएआई ने कहा कि खाद्य उत्पादों के लेबल और प्रचार सामग्री में किसी भी प्रकार के ऐसे दावे नहीं होने चाहिए जो उपभोक्ताओं को गुमराह करें। नियामक के अनुसार, नोटिस जारी होने के बाद कई प्रमुख खाद्य कारोबार संचालकों ने तत्काल कार्रवाई करते हुए अपने उत्पादों और विपणन सामग्री में आवश्यक बदलाव किए हैं। एफएसएसएआई ने बताया कि मोंडेलेज इंडिया फूड्स प्राइवेट लिमिटेड के कुछ उत्पादों पर भ्रामक स्वास्थ्य और पोषण संबंधी तुलनात्मक दावे पाए गए थे। नोटिस मिलने के बाद कंपनी ने संबंधित दावों और विज्ञापनों को ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स से हटा लिया तथा नियमों के अनुरूप आवश्यक संशोधन किए। इसी प्रकार सैपियंस लैब्स को भी एक भ्रामक दावे को लेकर नोटिस जारी किया गया था। कंपनी ने एफएसएसएआई को जवाब सौंपते हुए अपने उत्पाद से जुड़े सभी दावे और प्रचार सामग्री वापस ले ली। एक अन्य मामले में विची एग्रो प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा विपणन (मार्केटिंग) किए जा रहे और मिसेज जानकी जय बारोट६ जेजे फूड्स द्वारा प्रसंस्कृत एवं पैक किए गए उत्पादों पर भ्रामक व्यापारिक नाम का उपयोग पाया गया। एफएसएसएआई के हस्तक्षेप के बाद फ्लिपकार्ट से जवाब प्राप्त हुआ और संबंधित उत्पाद को प्लेटफॉर्म से हटा दिया गया। एफएसएसएआई ने एमवे इंडिया एंटरप्राइजेज प्राइवेट लिमिटेड के खिलाफ भी कार्रवाई की। कंपनी अपने उत्पाद 100 परसेंट प्योर कोकोनट ऑयल के नाम में 100 परसेंट शब्द का उपयोग कर रही थी। नियामक ने कहा कि यह खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, 2006, खाद्य सुरक्षा एवं मानक (विज्ञापन एवं दावे) विनियम, 2018 तथा खाद्य उत्पादों के लेबल और प्रचार सामग्री पर 100 परसेंट शब्द के उपयोग को बंद करने संबंधी परामर्श का उल्लंघन था। नोटिस मिलने के बाद एमवे इंडिया ने अनुपालन रिपोर्ट सौंपते हुए पुष्टि की कि उसने स्वेच्छा से अपने उत्पाद की पैकेजिंग और प्रचार सामग्री से ५100 परसेंट६ शब्द हटा दिया है। कंपनी ने यह भी बताया कि पुराने स्टॉक की बिक्री बंद कर दी गई है और संशोधित पैकेजिंग के साथ नए उत्पाद बाजार में उपलब्ध कराए जा रहे हैं। एफएसएसएआई का कहना है कि उसका उद्देश्य केवल नियमों का पालन कराना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना भी है कि उपभोक्ताओं को खाद्य उत्पादों के बारे में सही, स्पष्ट और तथ्यात्मक जानकारी मिले। नियामक ने दोहराया कि भ्रामक दावों के खिलाफ कार्रवाई आगे भी जारी रहेगी, ताकि उपभोक्ता हितों की रक्षा की जा सके और खाद्य बाजार में पारदर्शिता बनी रहे।

# कौन हैं आबिद मुश्ताक? जडेजा को मानते हैं अपना आदर्श, दलीप ट्रॉफी में पांच विकेट लेकर मचाया धमाल

नई दिल्ली,एजेंसी। दलीप ट्रॉफी में दूसरे दिन अगर किसी गेंदबाज ने अपनी गेंदों से बल्लेबाजों को सबसे ज्यादा परेशान किया तो वह जम्मू–कश्मीर के बाएं हाथ के स्पिनर आबिद मुश्ताक रहे। वेस्ट जोन के बल्लेबाजों के खिलाफ उन्होंने ऐसा स्पेल डाला, जिसमें रन बनाना तो दूर, उनके सामने टिके रहना भी मुश्किल नजर आया। करीब 26 ओवर तक गेंदबाजी करने के बावजूद मुश्ताक ने सिर्फ 39 रन खर्च किए और पांच विकेट अपने नाम किए। उनकी गेंदबाजी में खास बात सिर्फ विकेटों की संख्या नहीं थी, बल्कि लगातार एक ही जगह गेंद डालकर बल्लेबाजों पर बनाया गया दबाव था। यही अंदाज उनके आदर्श रवींद्र जडेजा की गेंदबाजी की याद दिलाता है। दिन का खेल खत्म होने के बाद जब आबिद से उनकी सफलता का राज पूछा गया तो उन्होंने अपने अंदाज में जवाब दिया। उन्होंने कहा, श्मैं शांत चलता हूं, अंदर एक गुफा बनाता हूं। उसका असर बाहर रहता है और आखिर में दिखाई देता है।श उनकी बात का मतलब यही था कि वह मैदान पर शांत रहकर चीजों को गहराई से समझने और अपनी योजना पर टिके रहने की कोशिश करते हैं। हालांकि, उनकी गेंदबाजी में सिर्फ सोच नहीं बल्कि शानदार अमल भी देखने को मिला।वेस्ट जोन के बल्लेबाजों को उन्होंने शुरुआत से ही खुलकर खेलने का मौका नहीं दिया। बल्लेबाज कभी बड़ा शॉट खेलने की कोशिश करता तो मुश्ताक अगली ही गेंद पर अपनी लाइन और लेंथ से उसे फिर दबाव में डाल देते। मुश्ताक ने नॉर्थ जोन की ओर से कुल 25.4 ओवर गेंदबाजी की। इस दौरान उन्होंने महज 39 रन देकर पांच विकेट झटके। उनकी गेंदबाजी की बदौलत नॉर्थ जोन ने वेस्ट जोन को पहली पारी में 251 रन पर रोककर 64 रन की बढ़त हासिल की। उनका यह प्रदर्शन खास इसलिए भी है क्योंकि मैच की शुरुआत में परिस्थितियां स्पिन गेंदबाजों के लिए बहुत अनुकूल नहीं मानी जा रही थीं। आसमान में घने बादल थे और हवा में स्विंग के लिए मदद मौजूद थी। ऐसे में उम्मीद थी कि तेज गेंदबाजों को ज्यादा फायदा मिलेगा और स्पिन बल्लेबाजों को राहत देगी, लेकिन मुश्ताक ने इस धारणा को गलत साबित कर दिया। उन्होंने नॉर्थ जोन के 65.4 ओवरों में से करीब 26 ओवर अकेले डाले और लगातार बल्लेबाजों को परेशान किया।

मुश्ताक के पांच विकेटों में पृथ्वी शॉ का विकेट सबसे खूबसूरत गेंदों में से एक रहा। उन्होंने गेंद को लेग स्टंप की लाइन से अंदर की ओर लाया। गेंद पिच होने के उदाहरण था। बाएं हाथ के बल्लेबाज के खिलाफ वह राउंड द विकेट आए। आमतौर पर इस एंगल से गेंद के लेग स्टंप के बाहर पिच होने की संभावना बढ़ जाती है, जिससे एलबीडब्ल्यू का खतरा कम हो जाता है। लेकिन मुश्ताक की गेंद ऑफ स्टंप पर पड़ी और सीधी हो गई। उन्होंने बल्लेबाज को पूरी तरह मात दे दी। मुश्ताक ने मुशीर खान को आउट तो नहीं किया, लेकिन उनकी बल्लेबाजी को पूरी तरह बांधकर रखा। मुशीर ने 126 गेंदों पर 31 रन बनाए। उन्होंने मुश्ताक के खिलाफ 52 गेंदों में सिर्फ 11 रन बनाए। मुशीर ने कई बार आगे निकलकर गेंदबाज पर दबाव बनाने की कोशिश की, करने की कोशिश करे तब भी। मुझे लगता है कि मेरी गति पर बल्लेबाज के लिए मुझे स्वीप करना मुश्किल होता है। यही जिद उनकी गेंदबाजी की सबसे बड़ी ताकत नजर आई। वह बल्लेबाज को अपनी योजना के मुताबिक खेलने के लिए मजबूर करते रहे। आबिद मुश्ताक खुलकर रवींद्र जडेजा को अपना आदर्श मानते हैं। लंबे स्पेल में लगातार एक ही क्षेत्र में गेंद डालना, बल्लेबाज को रन बनाने का मौका नहीं देना और फिर उसी दबाव से विकेट निकालनाकृ मुश्ताक के प्रदर्शन में जडेजा की झलक साफ नजर आई। दिलचस्प बात यह है कि 2023 की बॉर्डर–गावस्कर ट्रॉफी के दौरान ऑस्ट्रेलिया ने मुश्ताक को भारत में नेट गेंदबाज के तौर पर भी अपने साथ जोड़ा था। उनका काम जडेजा जैसी सटीक गेंदबाजी का सामना करने के लिए ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों को अभ्यास कराना था। आबिद मुश्ताक जम्मू–कश्मीर के बाएं हाथ के स्पिन गेंदबाज हैं, जिन्होंने घरेलू क्रिकेट में अपनी किफायती और विकेट लेने वाली गेंदबाजी से पहचान बनाई है। वह खासतौर पर मुश्किल परिस्थितियों में लंबे स्पेल डालने के लिए जाने जाते हैं। 2023–24 रणजी ट्रॉफी में उन्होंने पुडुचेरी के खिलाफ सिर्फ 87 रन का लक्ष्य बचाने में अहम भूमिका निभाते हुए 10 विकेट झटके थे। इसके अलावा उन्होंने तत्कालीन गत चौंपियन विदर्भ के खिलाफ 8 विकेट पर 18 रन की शानदार गेंदबाजी की थी। उनके प्रथम श्रेणी रिकॉर्ड में कई ऐसे स्पेल हैं जिनमें उन्होंने बेहद कम इकॉनमी रेट के साथ बड़ी संख्या में विकेट हासिल किए हैं। 2025 में केरल के खिलाफ एक मैच में मुश्ताक से ऐसा कैच छूट गया था, जिसकी कीमत जम्मू–कश्मीर को चुकानी पड़ी। वह मुकाबला सिर्फ एक रन के अंतर से तय हुआ और टीम पहली बार रणजी ट्रॉफी सेमीफाइनल में पहुंचने से रह गई। लेकिन मुश्ताक ने उस निराशा से वापसी की। इसके बाद वह जम्मू–कश्मीर की पहली रणजी ट्रॉफी खिताब जीतने वाली टीम का हिस्सा बने।

# सिर्फ बल्लेबाजी नहीं, अब गेंदबाजी में भी वैभव सूर्यवंशी का जलवाय ऐसा क्या किया कि लोग चौंक गए?

बंगलूरू,एजेंसी। दलीप ट्रॉफी में ईस्ट जोन और नॉर्थ ईस्ट जोन के बीच क्वार्टर फाइनल मुकाबला जारी है। बंगलूरू के सीओई में खेले जा रहे इस मुकाबले में भले ही वैभव सूर्यवंशी बल्लेबाजी में कोई कमाल न दिखा पाए हों, लेकिन गेंदबाजी में उनका जलवा जारी है। ईस्ट जोन से खेल रहे वैभव ने नॉर्थ ईस्ट जोन की दूसरी पारी में महज चार गेंदों में दो विकेट झटके। उन्होंने तीन ओवर का स्पेल डाला, जिसमें 11 रन खर्च किए और दो विकेट लिए। दरअसल, मैच में ईस्ट जोन ने पहले बल्लेबाजी करते हुए अपनी पहली पारी में 467 रन बनाए थे। वैभव छह गेंद में दो चौके की मदद से आठ रन बना पाए थे। इसके बाद उनकी आलोचना भी हुई थी और सवाल भी उठे थे कि क्या वह रेड बॉल क्रिकेट के लायक हैं। हालांकि, ईस्ट जोन ने कुमार कुशाग्र के 55 रन, सुदीप कुमार घरामी के 146 रन और शाहबाज अहमद के 167 रन की बदौलत पहाड़ जैसा स्कोर खड़ा किया।

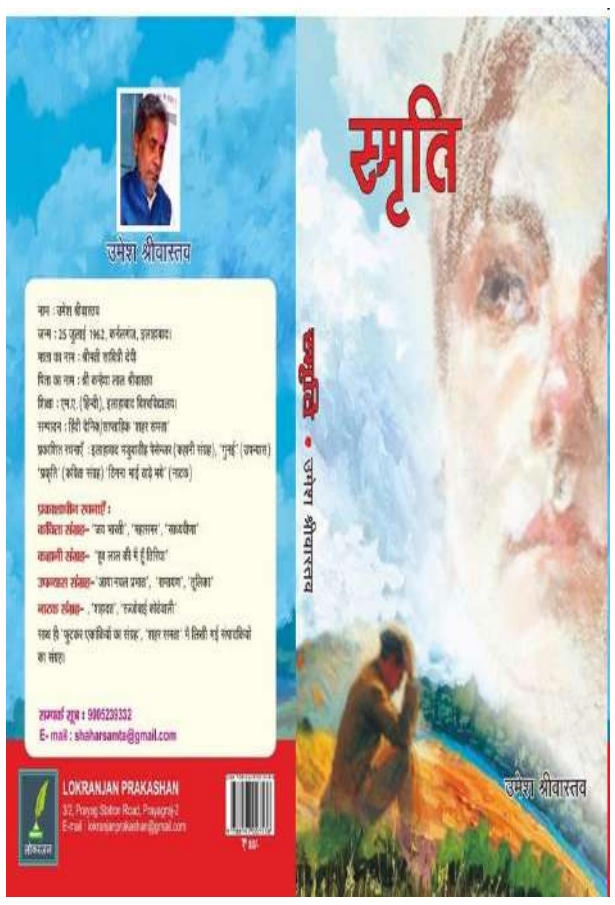


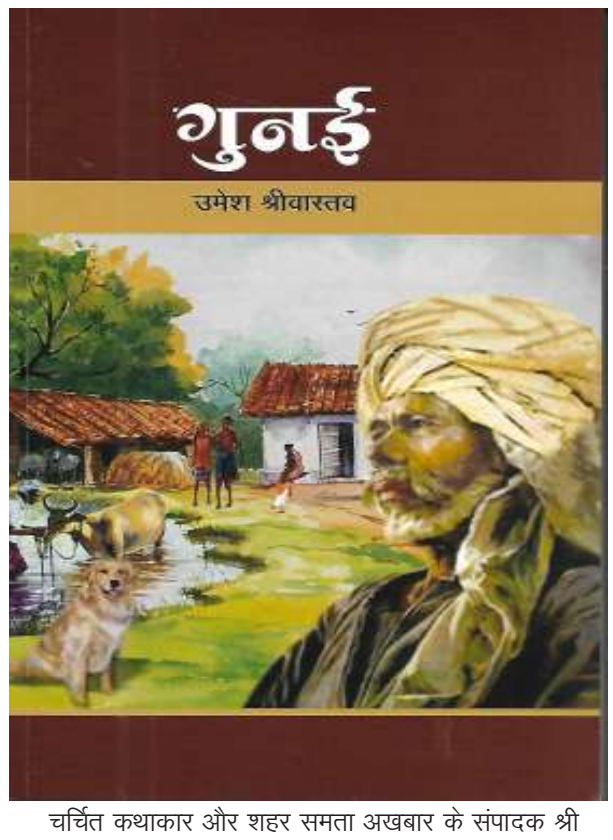


चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

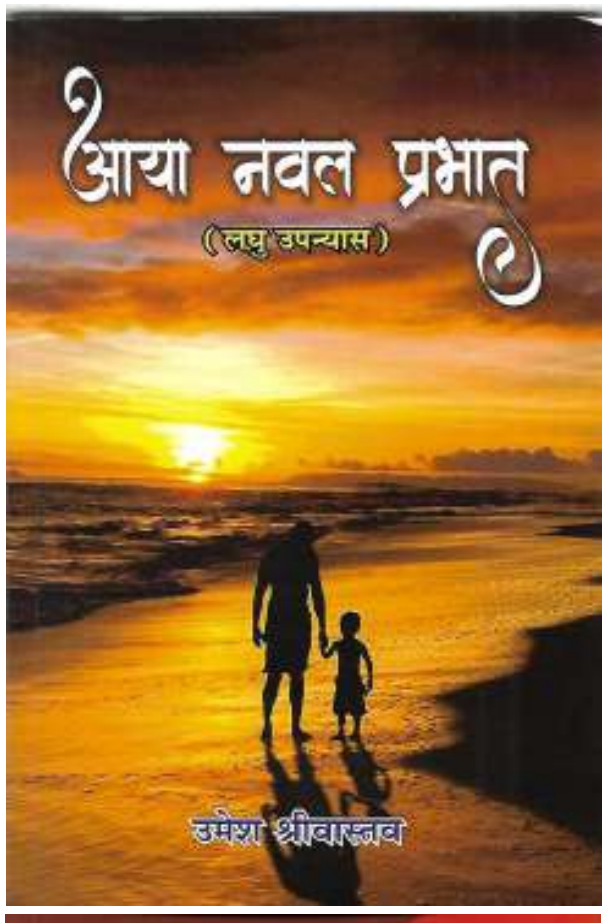


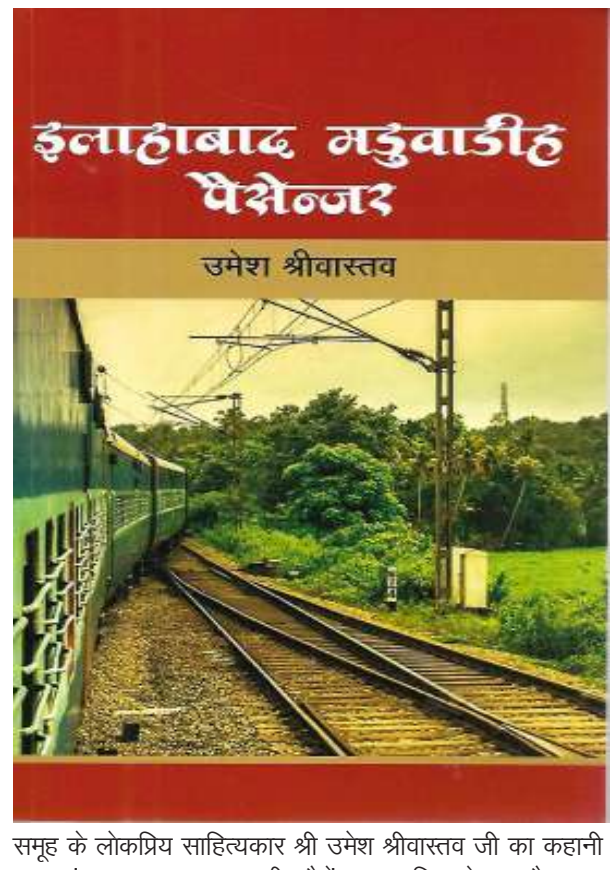


समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

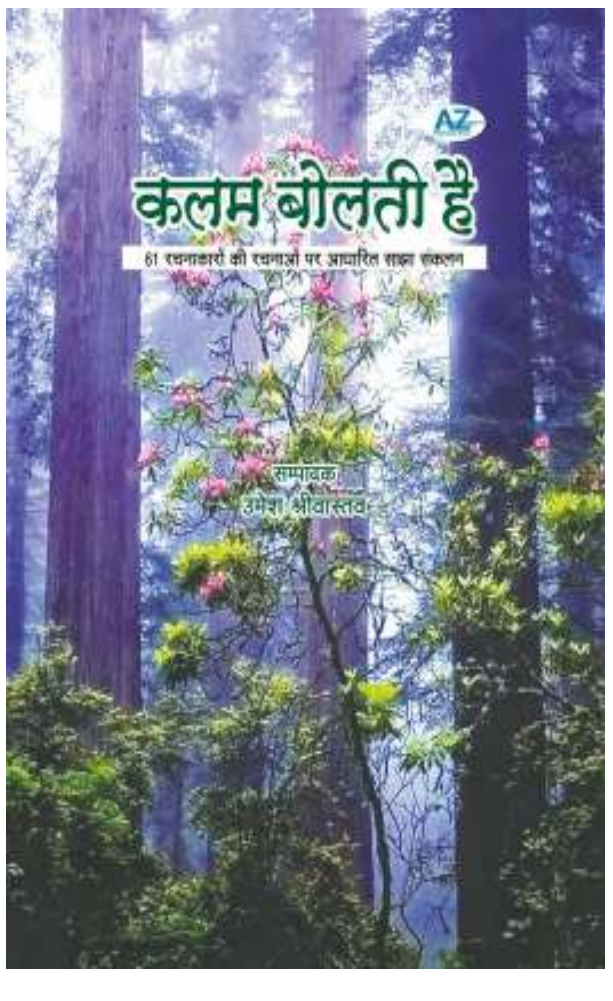


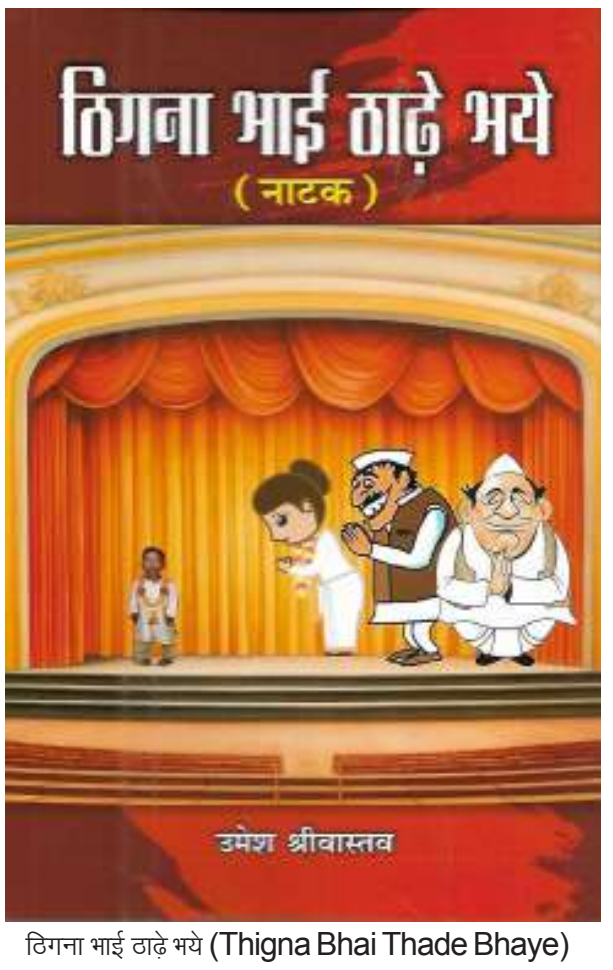


ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

## संक्षिप्त

### अमेरिका में विदेशी छात्रों की कमी: आवेदन 10: घटे, नए दाखिले में भी गिरावट, वीजा नियम में सख्ती से बदला रुझान?

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में सख्त होती वीजा जांच और आव्रजन नीतियों के बीच विदेशी छात्रों का रुझान कम होता दिख रहा है। सीएनबीसी की रिपोर्ट के अनुसार, 2026–27 के शैक्षणिक सत्र के लिए स्नातक दाखिले के कुल आवेदन बढ़े

हैं। हालांकि, एक मार्च तक विदेशी आवेदकों की संख्या में 10 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। यह अब तक की सबसे बड़ी गिरावट है। नए छात्रों की संख्या 17 प्रतिशत कम अमेरिकी विदेश विभाग और अंतरराष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के आंकड़ों के अनुसार, 2025 के शरद सत्र में अमेरिका आने वाले नए विदेशी छात्रों की संख्या पिछले वर्ष की तुलना में 17 प्रतिशत घट गई। संस्थान के 2026 के वसंत आकलन में भी अगले शरद सत्र में विदेशी छात्रों के कुल नामांकन में और गिरावट का अनुमान लगाया गया है। एशिया और अफ्रीका से आवेदन करने वाले छात्रों की संख्या में कमी आई है। शीर्ष आइवी लीग संस्थानों पर असर अपेक्षाकृत कम पड़ने की संभावना जताई गई है। मध्यम श्रेणी के निजी और क्षेत्रीय सार्वजनिक संस्थान विदेशी छात्रों की फीस पर अधिक निर्भर हैं। ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया और सिंगापुर जैसे देशों की ओर छात्रों का रुझान बढ़ने की आशंका जताई गई है। कॉलेजों की आय पर पड़ सकता है असर क्रिमसन एजुकेशन के सह–संस्थापक और मुख्य कार्यकारी जेमी बीटन ने कहा कि मध्यम श्रेणी के निजी कॉलेज और क्षेत्रीय सार्वजनिक संस्थान पूरी फीस देने वाले विदेशी छात्रों पर काफी निर्भर हैं। यदि ये छात्र दूसरे देशों की ओर रुख करते हैं तो संस्थानों के लिए आय की कमी पूरी करना मुश्किल हो सकता है। घरेलू छात्रों की संख्या घटने की आशंका भी उनके सामने चुनौती है। 3.4 अरब डॉलर और 40 हजार नौकरियों का खतरा अंतरराष्ट्रीय शिक्षकों के संगठन नाफ्सा के विश्लेषण के अनुसार, इस वर्ष विदेशी छात्रों के नामांकन में गिरावट से अमेरिकी स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को सामूहिक रूप से 3.4 अरब डॉलर का नुकसान हो सकता है। करीब 40 हजार नौकरियां भी खतरे में पड़ सकती हैं। अमेरिका लंबे समय से विदेशी छात्रों का सबसे बड़ा केंद्र रहा है और भारत व चीन इसके प्रमुख स्रोत देशों में हैं। रिपोर्ट ऐसे समय आई है, जब अमेरिका में वीजा नीतियों को लेकर विवाद जारी है। अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने नए एच–1बी आवेदकों के लिए प्रस्तावित 103,265 डॉलर शुल्क का समर्थन किया है। इससे पहले 100,000 डॉलर शुल्क का प्रस्ताव अदालत में रद्द हो गया था।

### ट्रंप का 'टैरिफ वार' जारी: चीन के खिलाफ नया प्लान, सस्ते सामान पर 7.5: कर संभव, कनाडा के लिए भी बढ़ी मुश्किल

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप चीन पर नया टैरिफ लगाने की तैयारी में हैं। मामले से जुड़े लोगों के मुताबिक, यह कदम चीन पर वैश्विक बाजार में कम कीमत वाले सामान की बाढ़ लाने के आरोप के बाद उठाया जा रहा है। प्रस्तावित शुल्क 7.5 फीसदी हो सकता है, हालांकि अंतिम फैसला अभी नहीं हुआ है। बताया जा रहा है कि अमेरिकी प्रशासन ऐसा

स्तर तय करना चाहता है जिससे अमेरिका और चीन के बीच चल रहा एक साल का व्यापारिक समझौता प्रभावित न हो। साथ ही सितंबर के अंत में ट्रंप और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच प्रस्तावित मुलाकात पर भी इसका असर न पड़े। चीन पर पहले से लगे शुल्क के ऊपर लगेगा नया टैरिफ? प्रस्तावित नया शुल्क चीन पर पहले से लागू टैरिफ के अतिरिक्त होगा। पिछले महीने अमेरिका ने दुनिया की करीब 60 अर्थव्यवस्थाओं से आने वाले सामान पर 10 से 12.5 फीसदी तक के शुल्क की घोषणा की थी। इन देशों पर जबरन मजदूरी से बने उत्पादों पर रोक को प्रभावी ढंग से लागू नहीं करने का आरोप लगाया गया था। चीन समेत कई देशों ने इस कदम का विरोध किया था। चीन के श्ओवरकैपेसिटीश पर अमेरिका की नजर ट्रंप प्रशासन ने मार्च में चीन समेत कई देशों की अतिरिक्त औद्योगिक क्षमता और जबरन मजदूरी से जुड़े नियमों को लेकर औपचारिक जांच शुरू की थी। चीन की जांच अमेरिकी व्यापार कानून की धारा 301 के तहत की जा रही है। अमेरिका का आरोप है कि चीन की कई इंडस्ट्रीज में जरूरत से ज्यादा उत्पादन क्षमता है, जिससे वैश्विक बाजार में कम कीमत वाले उत्पादों की आपूर्ति बढ़ रही है। ऑटोमोबाइल, सोलर पैनल, सीमेंट और स्टील जैसे क्षेत्रों में चीन की बड़ी उत्पादन क्षमता को लेकर उसके व्यापारिक साझेदार चिंता जता चुके हैं। चीन ने हालांकि ओवरकैपेसिटी के आरोपों को खारिज किया है। चीन का व्यापार सरप्लस रिकॉर्ड स्तर पर चीन में घरेलू मांग धीमी होने के कारण कई कंपनियों ने विदेशी बाजारों का रुख किया है।


### आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र

शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र

मोबाईल नम्बर. 9190052 39332

.919450482227


# NSA अजीत डोभाल–हान झेंग की मुलाकात, भारत–चीन सीमा पर शांति–रिश्तों पर चर्चा, आज वांग यी से वार्ता

बीजिंग, एजेंसी। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल ने मंगलवार को चीन के उपराष्ट्रपति हान झेंग से मुलाकात की। दो दिवसीय चीन यात्रा पर पहुंचे डोभाल ने इस बैठक में सीमा क्षेत्रों में शांति और स्थिरता बनाए रखने के साथ भारत–चीन द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा की। यह मुलाकात भारत–चीन सीमा विवाद पर विशेष प्रतिनिधियों की 25वें दौर की वार्ता से पहले हुई। डोभाल मंगलवार को चीन के विदेश मंत्री और भारत–चीन सीमा वार्ता में चीन के विशेष प्रतिनिधि वांग यी के साथ भी बातचीत करेंगे। डोभाल और हान झेंग के बीच किन मुद्दों पर हुई चर्चा?

भारत के दूतावास के मुताबिक, डोभाल और हान झेंग ने सीमा क्षेत्रों में शांति और स्थिरता को मजबूत करने के उपायों पर चर्चा की। दोनों नेताओं ने आर्थिक, राजनीतिक और बहुपक्षीय मंचों पर द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने के तरीकों पर भी विचार किया। यह बातचीत दोनों देशों के शीर्ष नेतृत्व के बीच बनी सहमति के अनुरूप संबंधों को आगे बढ़ाने के प्रयास के तौर पर देखी जा रही है। वांग यी के साथ आज होगी सीमा वार्ता डोभाल और वांग यी के बीच मंगलवार को भारत–चीन सीमा मुद्दे पर विशेष प्रतिनिधियों की 25वें दौर की वार्ता होगी। दोनों के बीच इससे पहले जून में नई दिल्ली में ब्रिक्स देशों के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों की बैठक के दौरान मुलाकात हुई थी। विदेश मंत्रालय ने उस बातचीत को रचनात्मक और भविष्य की दिशा तय करने वाली बताया था। दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय संबंधों में हालिया घटनाक्रम और सामान्य स्थिति की ओर बढ़ने में हुई प्रगति की समीक्षा की थी। भारत–चीन रिश्तों में क्यों दिख रही नरमी? डोभाल की चीन यात्रा ऐसे समय हुई है जब नई दिल्ली और बीजिंग के बीच रिश्तों को धीरे–धीरे सामान्य बनाने की कोशिशें जारी हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के दौरान हुई बैठकों के बाद दोनों देशों के संबंधों में सकारात्मक गति देखने को मिली है। दोनों नेताओं ने इस बात पर जोर दिया था कि भारत और चीन विकास के साझेदार हैं, प्रतिद्वंद्वी नहीं। साथ ही यह भी कहा गया था कि दोनों देशों के मतभेद विवाद में नहीं बदलने चाहिए। स्थिर रिश्तों को बताया गया दोनों देशों के हित में जरूरी विदेश मंत्रालय के अनुसार, भारत और चीन के बीच स्थिर, भरोसेमंद और रचनात्मक संबंध दोनों देशों के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। दोनों देशों के बीच आपसी सम्मान, साझा हित और एक–दूसरे की संवेदनशीलताओं को ध्यान में रखते हुए सहयोग बढ़ाने पर जोर दिया गया है। भारत का मानना है कि दोनों देशों के बीच बेहतर संबंध न केवल द्विपक्षीय विकास के लिए जरूरी हैं, बल्कि बहुध्रुवीय एशिया और विश्व व्यवस्था के लिए भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

# अमेरिका ने कसा ईरान पर शिकंजा, भारत की चार कंपनियों पर भी प्रतिबंध, पेट्रोलियम कारोबार से जुड़ा है मामला

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका ने ईरान से जुड़े पेट्रोलियम और पेट्रोकेमिकल कारोबार तथा खरीद नेटवर्क में कथित भूमिका को लेकर भारत की चार कंपनियों पर प्रतिबंध लगाए हैं। अमेरिकी विदेश विभाग के अनुसार, यह कार्रवाई ईरान की सैन्य गतिविधियों, खरीद नेटवर्क और पेट्रोलियम–पेट्रोकेमिकल कारोबार को निशाना बनाने वाले श्ऑपरेशन इकोनॉमिक आउटकास्टश के तहत की गई है। अमेरिकी विदेश विभाग ने जिन भारतीय कंपनियों का नाम लिया है, उनमें पोर्टईज पार्टनर्स एलएलपी, सदाशिवा ओवरसीज लिमिटेड, पीपी सॉफ्टटेक प्राइवेट लिमिटेड और प्रकृतीज इंफ्रा इम्पेक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड शामिल हैं। अमेरिका ने इन कंपनियों पर ईरानी मूल के पेट्रोलियम या पेट्रोकेमिकल उत्पादों के कारोबार में शामिल होने के आरोप लगाए हैं। पोर्टईज पार्टनर्स पर क्या आरोप लगाया गया? अमेरिकी विदेश विभाग का दावा है कि पोर्टईज पार्टनर्स एलएलपी ने ईरान से भारत में कई खेपों में पेट्रोकेमिकल उत्पादों के आयात में मदद की। विभाग ने इसके दो नामित साझेदारों के तौर पर भारतीय नागरिक इंद्रिस्मिया अशरफमिया शेख और हरीश रामचंद्र रंगी का भी उल्लेख किया है। सदाशिवा ओवरसीज पर कितने कारोबार का आरोप?

अमेरिका के मुताबिक, सदाशिवा ओवरसीज लिमिटेड ने फरवरी 2024 से जून 2025 के बीच कई कंपनियों से करीब 6.9 करोड़ डॉलर मूल्य के ईरानी मूल के पेट्रोलियम उत्पाद आयात किए। इनमें अमेरिकी प्रतिबंधों के दायरे में आ चुकी कंपनी बोनजोर कमोडिटी एफजेडई भी शामिल बताई गई है। अमेरिकी विदेश विभाग ने कहा कि कंपनी को ईरान से पेट्रोलियम या पेट्रोलियम उत्पादों की खरीद, अधिग्रहण, बिक्री, परिवहन या विपणन से जुड़े महत्वपूर्ण लेनदेन में कथित तौर पर जानबूझकर शामिल होने के आधार पर प्रतिबंधित किया गया है।

पीपी सॉफ्टटेक पर क्या कहा अमेरिका ने?

अमेरिकी विदेश विभाग ने पीपी सॉफ्टटेक प्राइवेट लिमिटेड पर भी ईरानी मूल के पेट्रोलियम उत्पादों के आयात का आरोप लगाया है। विभाग के अनुसार, कंपनी ने जनवरी 2024 से जून 2025 के बीच करीब 2.5 करोड़ डॉलर मूल्य के ऐसे उत्पाद आयात किए। कंपनी के निदेशक के तौर पर भारतीय नागरिक प्रशांत गर्ग का नाम भी जारी किए गए विवरण में शामिल है। प्रकृतीज इंफ्रा पर भी लगा प्रतिबंध अमेरिका ने प्रकृतीज इंफ्रा इम्पेक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड को भी कार्रवाई के दायरे में रखा है। अमेरिकी विदेश विभाग का आरोप है कि कंपनी ने मई 2023 से फरवरी 2026 के बीच विभिन्न कंपनियों से करीब 2.5 करोड़ डॉलर मूल्य के ईरानी मूल के पेट्रोलियम उत्पाद आयात किए। अमेरिकी कार्रवाई का व्यापक उद्देश्य ईरान के पेट्रोलियम राजस्व पर अंकुश लगाना और उन नेटवर्क को बाधित करना है, जिनके जरिए ईरान की सैन्य गतिविधियों और खरीद व्यवस्था को कथित तौर पर मदद मिलती है। अमेरिकी विदेश विभाग के अनुसार, 'ऑपरेशन इकोनॉमिक आउटकास्ट' के तहत यह कार्रवाई ईरान से जुड़े सैन्य, खरीद और ऊर्जा कारोबार पर दबाव बढ़ाने की व्यापक अमेरिकी रणनीति का हिस्सा है। फिलहाल, अमेरिकी घोषणा पर इन भारतीय कंपनियों की ओर से कोई प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है।

# अमेरिका में AI की वजह से नहीं जाएगी शिक्षकों की नौकरी: शिक्षा मंत्री बोलीं– मशीन नहीं ले सकता इंसान की जगह

वॉशिगंटन, एजेंसी। अमेरिकी शिक्षा मंत्री लिंडा मैकमोहन ने सोमवार को कहा कि स्कूलों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) को अपनाया जाना चाहिए, लेकिन इसके इस्तेमाल के लिए जरूरी सुरक्षा उपाय और स्पष्ट सीमाएं तय होनी चाहिए। उन्होंने जोर देकर कहा कि ।प को कभी भी शिक्षकों के विकल्प के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। व्हाइट हाउस में पत्रकारों से बातचीत के दौरान मैकमोहन ने कहा कि AI अब शिक्षा व्यवस्था का हिस्सा बन चुका है और इसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। हालांकि, उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि तकनीक चाहे जितनी विकसित हो जाए, कक्षा में शिक्षक और छात्रों के बीच मानवीय संवाद की जगह नहीं ले सकती। AI को अपनाना जरूरी, लेकिन सुरक्षा उपाय भी हों मैकमोहन ने कहा कि सरकार ने फिलहाल AI को रेगुलेट करने के बारे में विस्तार से चर्चा नहीं की है, लेकिन वह शिक्षा के क्षेत्र में इस तकनीक को अपनाने पर जोर दे रही है। उन्होंने कहा कि ।प आ चुका है और स्कूलों को इससे दूरी बनाने के बजाय इसका सही तरीके से इस्तेमाल करना सीखना होगा। उन्होंने ऑस्टिन, टेक्सास के अल्फा स्कूल का उदाहरण देते हुए कहा कि उन्होंने वहां ।प को वास्तविक कक्षा में काम करते हुए देखा है। उनके मुताबिक, इस तकनीक को अपनाने के साथ कुछ नियम और सुरक्षा सीमाएं तय करना भी जरूरी है, ताकि इसका इस्तेमाल छात्रों के हित में हो। शिक्षक की जगह नहीं ले सकता AI अमेरिकी शिक्षा मंत्री ने स्पष्ट किया कि AI का इस्तेमाल शिक्षक के विकल्प के तौर पर नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि बच्चों की शिक्षा में शिक्षक और छात्र के बीच प्रत्यक्ष मानवीय संपर्क बेहद महत्वपूर्ण है। मैकमोहन के मुताबिक, तकनीक बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने में मदद कर सकती है, लेकिन शिक्षा केवल जानकारी हासिल करने का नाम नहीं है। कक्षा में शिक्षक का मार्गदर्शन, संवाद और बच्चों की व्यक्तिगत जरूरतों को समझना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। कमजोर छात्रों से लेकर तेज छात्रों तक मैकमोहन ने AI के संभावित फायदों को गिनाते हुए कहा कि यह बच्चों के लिए एक व्यक्तिगत ट्यूटर की तरह काम कर सकता है। जो छात्र किसी विषय में पीछे रह गए हैं, वे AIकी मदद से पाठ दोबारा समझ सकते हैं और अपनी गति से अभ्यास कर सकते हैं। वहीं, जो छात्र अपनी कक्षा के स्तर से आगे हैं, उनके लिए AIज्यादा उन्नत सामग्री और चुनौतीपूर्ण पाठ उपलब्ध कराने में मदद कर सकता है। उन्होंने कहा कि अगर इस तकनीक का सही तरीके से इस्तेमाल किया जाए तो यह छात्रों के लिए एक बेहद उपयोगी अवसर साबित हो सकती है। शिक्षा विभाग में बड़े बदलाव की तैयारी मैकमोहन ने ट्रंप प्रशासन की शिक्षा विभाग में बड़े बदलाव की योजना पर भी बात की। उन्होंने बताया कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप शिक्षा व्यवस्था में एक बड़े बदलाव के पक्ष में हैं और चाहते हैं कि कई जिम्मेदारियां संघीय सरकार से वापस राज्यों को दी जाएं। मैकमोहन के मुताबिक, ट्रंप का मानना है कि दशकों तक भारी खर्च के बावजूद अमेरिकी छात्रों के परीक्षा परिणाम लगातार कमजोर हुए हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति ने शिक्षा व्यवस्था को लेकर उनसे कहा था कि देश अपने बच्चों के लिए अपेक्षित परिणाम हासिल नहीं कर पाया है और अब इसमें बड़े बदलाव की जरूरत है। 3 ट्रिलियन डॉलर से ज्यादा खर्च, फिर भी टेस्ट स्कोर में गिरावट मैकमोहन ने कहा कि अमेरिकी शिक्षा विभाग 1980 में अस्तित्व में आया और तब से शिक्षा पर 3 ट्रिलियन डॉलर से ज्यादा खर्च किए जा चुके हैं। इसके बावजूद छात्रों के टेस्ट स्कोर में लगातार गिरावट देखने को मिली है। उन्होंने इसी आधार पर तर्क दिया कि मौजूदा संघीय शिक्षा व्यवस्था की समीक्षा जरूरी है। उनका कहना है कि शिक्षा से जुड़ी ज्यादा जिम्मेदारियां राज्यों को सौंपने से स्थानीय स्तर पर निर्णय लेने और स्कूलों की जरूरत के मुताबिक नीतियां बनाने में मदद मिल सकती है। शिक्षा विभाग बंद करने की दिशा में श्प्रूफ ऑफ कॉन्सेप्टश मैकमोहन ने कहा कि शिक्षा विभाग को पूरी तरह खत्म करने के लिए कांग्रेस की मंजूरी जरूरी होगी। इसलिए प्रशासन फिलहाल यह दिखाने की कोशिश कर रहा है कि विभाग की कुछ जिम्मेदारियां दूसरी संघीय एजेंसियां ज्यादा प्रभावी ढंग से संभाल सकती हैं। उन्होंने बताया कि प्रशासन विभिन्न विभागों के बीच अंतर–एजेंसी समझौते कर रहा है और कुछ कार्यक्रमों तथा जिम्मेदारियों को दूसरी एजेंसियों को सौंपने की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। मैकमोहन के अनुसार, इस प्रक्रिया का उद्देश्य कांग्रेस के सामने यह साबित करना है कि शिक्षा से जुड़े कुछ काम शिक्षा विभाग के बाहर भी प्रभावी तरीके से किए जा सकते हैं। राज्यों को ज्यादा अधिकार देने की तैयारी मैकमोहन ने कहा कि शिक्षा को राज्यों के स्तर पर वापस ले जाना ट्रंप प्रशासन की प्राथमिकताओं में शामिल है। उनका तर्क है कि स्थानीय और राज्य सरकारें अपने छात्रों की जरूरतों को संघीय सरकार की तुलना में ज्यादा बेहतर तरीके से समझ सकती हैं। उन्होंने शिक्षा विभाग को मुख्य रूप से कांग्रेस द्वारा स्वीकृत धनराशि को आगे पहुंचाने वाली संस्था के रूप में भी वर्णित किया। उनके मुताबिक, विभाग के कई कार्यक्रम ऐसे हैं जो शिक्षा विभाग के गठन से पहले दूसरी संघीय एजेंसियों के माध्यम से संचालित होते थे।

### हेगसेथ बोले– जरूरत पड़ी तो ईरान पर मिसाइल से हमला, सख्ती पर इस्राइली PM नेतन्याहू क्या बोले

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका ने ईरान के खिलाफ आर्थिक और सैन्य दबाव को एक साथ तेज कर दिया है। रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने होर्मुज जलडमरूमध्य समेत ईरान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई का विकल्प खुला रखा है, जबकि ट्रेजरी सेक्रेटरी स्कॉट बेसेंट ने श्ऑपरेशन इकोनॉमिक आउटकास्टश के जरिए ईरान के तेल, वित्तीय नेटवर्क और प्रतिबंधों से बचने वाले तंत्र को निशाना बनाने की घोषणा की है। दूसरी ओर, ईरान ने संकट से निपटने का भरोसा जताया है और इस्राइल ने अमेरिकी कदमों का समर्थन किया है। इससे तेहरान पर आर्थिक दबाव के साथ संभावित सैन्य टकराव का जोखिम भी बढ़ गया है। ऐसे में अमेरिका की रणनीति साफ तौर पर दो मोर्चों पर आगे बढ़ती दिखाई दे रही है एक

तरफ आर्थिक घेराबंदी और दूसरी तरफ सैन्य कार्रवाई का खुला विकल्प। होर्मुज में भी सैन्य कार्रवाई से इनकार नहीं

विस्कॉन्सिन के ओशकोश दौरे के दौरान हेगसेथ ने कहा कि अमेरिका ईरान के खिलाफ सैन्य बल के इस्तेमाल की संभावना को बिल्कुल खत्म नहीं कर रहा है। उनसे जब पूछा गया कि क्या फिलहाल सैन्य हमलों का विकल्प रोक दिया गया है, तो उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि ऐसा नहीं है। हेगसेथ के मुताबिक, अगर ईरान अमेरिकी सेना से टकराता है या ऐसी कार्रवाई करता है जिसे वॉशिंगटन सीमा पार करना मानता है, तो अमेरिका जरूरी कदम उठाएगा। उन्होंने कहा कि फिलहाल आर्थिक दबाव ईरान को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचा रहा है, लेकिन जरूरत पड़ने पर होर्मुज जलडमरूमध्य या ईरान के आसपास किसी भी इलाके में सैन्य कार्रवाई की जा सकती है। अमेरिका का दावा–होर्मुज पर मजबूत पकड़ हेगसेथ ने दावा किया कि अमेरिकी सेना ने होर्मुज जलडमरूमध्य में अपनी स्थिति मजबूत कर ली है और वहां से गुजरने वाले जहाजों की सुरक्षा करने की क्षमता रखती है। उनके अनुसार, ईरान की अर्थव्यवस्था लगातार दबाव में है और तेहरान यह भी समझता है कि जलडमरूमध्य में अमेरिकी सैन्य क्षमता उसके मुकाबले काफी मजबूत है। उन्होंने कहा कि ईरान के पास इस क्षेत्र से व्यापार और तेल की आवाजाही को प्रभावित करने की कुछ क्षमता जरूर है, लेकिन अमेरिका के पास समुद्री मार्ग को सुरक्षित रखने की बेहतर क्षमता मौजूद है। उनका दावा है कि इसी वजह से तेल का प्रवाह जारी रखा जा सकता है और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर ईरान के दबाव को सीमित किया जा सकता है। ईरानी नौसेना और मिसाइल क्षमता को नुकसान का दावा हेगसेथ ने ईरान की सैन्य क्षमताओं को लेकर भी बड़ा दावा किया। उन्होंने कहा कि अमेरिकी कार्रवाई से ईरान की नौसेना, रडार और मिसाइल प्रणालियों को गंभीर नुकसान पहुंचा है। हालांकि, उन्होंने यह भी माना कि ईरान के पास अब भी कुछ सैन्य क्षमताएं मौजूद हैं। अमेरिकी रक्षा मंत्री के मुताबिक, ईरान की मौजूदा सैन्य क्षमता पहले जैसी नहीं रह गई है। इसी आधार पर वॉशिंगटन का मानना है।


प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।